04- उधार की ज़िंदगी

05- कमाल जानवरों के कॉपीराइट का

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 19 मार्च, 2023

06- भाजपा सांसद-कांग्रेस विधायक ने किया भूमिपूजन

07- अब लगा कि हम भी 'ऑस्कर' के लायक

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 20 अंक 193 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

रास्ता...

फोटो- मणि मोहन

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

कविता

शहर में अजनबी

बस्ती के इससे लेकर, उस कोने तक निकल गया
होली खेलते मिले, बहुत से लोग
लेकिन झगड़े-फसाद का डर
मुझ अजनबी को कौन रंगता?
एक वीरान जमीन पर,सुर्ख रंगों से सराबोर
पलाश मिला,उसे भी किसी ने नहीं
खुद उसने अपने को रंगा
उससे बात करने की गरज से कुछ देर पास रूका
यही हाल सादगी पसंद, चंपा के पेड़ का
लेकिन वह सफेद झक्क् फूलों से लदा था
काले भूरे बादलों ने
आकाश को रंग रखा था
और कयी रंगों को पंख में लिए एक तितली
यहां -वहां जमीन रंगने की कोशिश में उड़ रही थी
रास्ते में कुछ कुत्ते
रंगों के उत्सव में डूबे मिले
पूरे मोहल्ले से उनकी पहचान थी
एक गैया और एक सांड को भी
किसी ने रंग दिया था
लेकिन इस अजनबी शहर में
होली के बावजूद मेरा बिना रंगे
घर लौटना हुआ
शर्मिंदगी छुपाने की गरज से
थोड़ा-सा गुलाल
अपने चेहरे पर लगा,मजबूर मुस्कान लिए
आईने के सामने मैं,एक मुसलमान की तरह
खुद से मिला।

-नरेंद्र गौड़

आधे म.प्र.में 20 मार्च तक बेमौसम बारिश

- भोपाल-मंदसौर में ओले गिरे, आंधी के साथ तेज बारिश
- खंडवा में आकाशीय बिजली गिरने से दो की मौत, राजगढ़ में बह गया मंडी में रखा गेहूं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में पिछले तीन दिन से मौसम का मिजाज बिगड़ा है। शनिवार शाम भोपाल, मंदसौर, आगर-मालवा और पन्ना में ओले गिरे। तेज आंधी के साथ बारिश हुई। खंडवा में आकाशीय बिजली गिरने से दो लोगों की मौत हो गई। इसके अलावा रतलाम के जावरा में भी तेज बारिश हुई। राजगढ़ में तेज बारिश से मंडी में रखा गेहूं बह गया।

आधे से ज्यादा मध्यप्रदेश में 20 मार्च तक बेमौसम बारिश का दौर जारी रहेगा। दो सिस्टम एक्टिव होने से ओले भी गिर रहे हैं। कई शहरों में हवा की स्पीड 75किमी प्रति घंटा तक पहुंच गई। मौसम वैज्ञानिकों ने ओलावृष्टि होने और तेज आंधी चलने की संभावना भी जताई है।

भोपाल में सुबह से धूप खिली थी। दोपहर बाद बादल छा गए। शाम होते-होते करीब 6~30 कई इलाकों में गरज-चमक और तेज आंधी के साथ बारिश शुरू हो गई। इस दौरान करोंद, अयोध्या बायपास, भानपुर समेत कई क्षेत्रों में बेर के आकार के ओले भी गिरे।

हरदा जिले की रहटगांव तहसील मुख्यालय समेत अन्य गांवों में करीब आधा घंटे तक बारिश के साथ ओलावृष्टि हुई। बारिश और ओले से किसानों को नुकसान हुआ है। खेतों में खड़ी फसल बिछ गई है।

24 घंटे में यहां 1 इंच तक बारिश

पिछले 24 घंटे में रायसेन के बाड़ी में 2.51 इंच तक पानी गिरा। बैतूल के शाहपुरा में 1.88 और भैंसदेही में 1.11 इंच बारिश हुई। शिवपुरी के बैराड़ में 1.20 इंच पानी गिरा। सिवनी के बरघाट में 2.28, छिंदवाड़ा के अमरवाड़ा में 1.22 इंच पानी गिरा।

खंडवा में शनिवार दोपहर बारिश के बाद ओलावृष्टि हुई। आकाशीय बिजली गिरने से खेत में काम कर रही दो महिलाओं की मौत हो गई। इसके अलावा चार अन्य लोग भी झुलस गए। घटना पंधाना थाना क्षेत्र अंर्तगत ग्राम बाबली और अंजनगांव की है। गांव में पिंकी और रविता समेत अन्य महिलाएं खेत में गेहूं फसल की कटाई कर रही थी। इसी दौरान बारिश शुरू हो गई। बिजली गिरने से पिंकी और रविता की मौत हो गई। मंदसौर में शनिवार दोपहर बेर के आकार के ओले गिरे। एक शख्स ने इसे टोकरी में भर लिया। आगर-मालवा में भी बारिश

इन जिलों में बारिश का दौर

भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, विदिशा, रायसेन, झाबुआ, मंदसौर, रतलाम, नीमच, बैतूल, राजगढ़, सागर, सतना, छतरपुर, दमोह, अनूपपुर, छिंदवाड़ा, कटनी, उज्जैन, देवास, शाजापुर, सीहोर, बालाघाट, बुरहानपुर, शिवपुरी, खंडवा, हरदा, मुरैना, धार, सिवनी समेत कई जिलों में बारिश होगी।

बालाघाट में चार्टर प्लेन क्रैश

दो पायलट सवार थे, एक का शव जलता दिखा, दूसरे की तलाश जारी थी

बालाघाट (नप्र)। मध्यप्रदेश के बालाघाट में शनिवार दोपहर को एक चार्टर प्लेन क्रैश हो गया। विमान में एक पायलट और एक ट्रेनी पायलट सवार थे। इनमें से एक की बॉडी दो चट्टानों के बीच जलती हुई नजर आई। सूचना पर पुलिस घटनास्थल पर रवाना हो गई है। हादसा बालाघाट जिले के लांजी और किरनापुर के बीच भक्कुटोला-कोसमारा की पहाड़ी पर हुआ। बालाघाट एसपी समीर सौरभ ने

बताया कि प्लेन में एक पायलट और एक महिला प्रशिक्षु पायलट थी। एक व्यक्ति का शव जलता हुआ दिख रहा है, दूसरे की तलाश कर रहे हैं। यह प्लेन महाराष्ट्र के गोंदिया जिले के बिरसी एयरपोर्ट का ट्रेनी विमान था। बिरसी एयरस्ट्रीप से एयरक्राफ्ट ने उड़ान भरी थी, जो दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। घटनास्थल जिला मुख्यालय से करीब 40 किमी दूर है।

उड़ान के 15 मिनट बाद हादसा

घटना दोपहर करीब 3.20 बजे की है। ये विमान हादसे से करीब 15 मिनट पहले ही बिरसी एयरपोर्ट से उड़ा था। बताया जा रहा है कि एयरक्रॉप्ट में पायलट मोहित और ट्रेनी पायलट वरसुका थीं। फिलहाल बचाव दल वहां पहुंच गया है। अभी हादसे की वजह पता नहीं चली है।

प्रस्फुटन समितियों एवं स्वैच्छिक संगठनों के महाकुंभ में बोले सीएम शिवराज

बहनों को वचन देता हूं जान चली जाए, पर विश्वास टूटने नहीं दूंगा

अब तो पाकिस्तान वाले भी कहते हैं कि या अल्लाह हमारे पास भी मोदी हो जाता

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जंबूरी मैदान में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा, एक जमाना था, जब मध्यप्रदेश अंधेरे का घर था, सड़कों पर गड्ढे थे। आज शानदार सड़कों का निर्माण बीजेपी सरकार ने कराया है। बिजली, पानी, सिंचाई का जाल बिछाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आगे बढ़ रहा है। वैभवशाली, गौरवशाली, संपन्न और समृद्ध भारत का निर्माण हो रहा है। अब तो पाकिस्तान वाले भी कहते हैं कि या अल्लाह हमारे पास भी मोदी हो जाता। सीएम मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के प्रस्फुटन समितियों एवं स्वैच्छिक संगठनों के महाकुंभ में शामिल हुए। उन्होंने लाडली योजना बहना की जानकारी दी। बोले- मैं पूरे प्रदेश की बहनों को वचन देता हूं कि जान भले ही चली जाए, तुम्हारे विश्वास को कभी टूटने नहीं दूंगा। खंडित नहीं होने दूंगा। लाडली बहना के आवेदन हम भरवाएंगे। न तो आय की जरूरत है, न मूल निवास की जरूरत है। बहन अगर कह देगी कि आमदनी 2.50 लाख से कम है, तो हम मान लेंगे। आवेदन के लिए अगर दूसरे गांव जाना पड़ता है, तो गाड़ी की व्यवस्था करवाएंगे। 25 मार्च से 30 अप्रैल तक फॉर्म भरे जाएंगे। 10 जून से पैसा आना शुरू हो जाएगा।

भोपाल में होगा आंगनवाड़ी कार्यकर्ता-सहायिकाओं का महासम्मेलन

सीएम से मिले पदाधिकारी, मानदेय बढ़ाने-पदोन्नति की नीति बनाने की मांग

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में अगले महीने आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाओं और मिनी कार्यकर्ताओं का महासम्मेलन होगा। इसमें ष्टरू शिवराज सिंह चौहान शामिल होंगे। वे मांगों को लेकर भी बात कहेंगे।

मांगों और महासम्मेलन को लेकर भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व में विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी सीएम से मिले। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका संघ की प्रदेश महामंत्री संगीता श्रीवास्तव ने बताया कि अपनी लंबित मांगों को लेकर मुख्यमंत्री से चर्चा की गई है। इसमें सकारात्मक बातें हुईं। मुख्यमंत्री ने भी मांगों पर सहमति जताई है। इसके लिए अप्रैल में महासम्मेलन आयोजित किए जाने की बात भी कही है।

इन मुद्दों को लेकर हुई चर्चा

- मानदेय में वृद्धि हो। यह एरियर्स की राशि के साथ मिले।
- रिटायरमेंट की राशि का आदेश दिए जाए।
- सुपरवाइजर के पद पर अनुभव और योग्यता के आधार पर पदोन्नति की नीति बनाई जाए।
- 15 से 20 अप्रैल के बीच हो सकता है सम्मेलन

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकता और मिनी कार्यकर्ताओं का सम्मेलन अगले महीने 15 से 20 तारीख के बीच हो सकता है। प्रदेश महामंत्री श्रीवास्तव ने बताया, लाड़ली बहना योजना में सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, मिनी कार्यकर्ता और आशा कार्यकर्ताएं भी शामिल की गई हैं। मुख्यमंत्री ने इन्हें भी लाभ दिए जाने की बात कही हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 28 °c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 19 मार्च 2023

ज्यामिति की रेखाओं और चित्रों में हम वे अक्षर सीखते हैं जिनसे यह संसार रूपी महान पुस्तक लिखी गयी है।
- गैलिलियो

बहुत महंगे बिकते हैं ऊंट के आंसू, कई देश कर रहे रिसर्च

ऊंट के आंसुओं से बन सकती है सांप के जहर की काट, बेशकीमती होते हैं ऊंट के आंसू

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऊंटनी के दूध के बारे में तो आपने खूब सुना होगा। ऊंटनी के दूध की मांग तेजी से बढ़ रही है। कई लोग इसका बिजनस कर अच्छा-खासा मुनाफा कमा रहे हैं। ऊंटनी का दूध सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। इस दूध की कीमत 2500 रुपये लीटर तक है। पूरी दुनिया में हर साल ऊंटनी के सिर्फ 30 लाख टन दूध का ही उत्पादन होता है। विदेशों में भी इस दूध की काफी मांग है। लेकिन ऊंट/ऊंटनी के आंसू और कीमती होते हैं। ऊंट के आंसू बहुत स्पेशल होते हैं। इनमें सांप के जहर को काटने की ताकत होती है। दुबई की सेंट्रल वेटेनरी रिसर्च लैबोरेटरी ने एक रिसर्च के बाद दावा किया है कि ऊंट के आंसू से सांप के जहर की काट तैयार की जा सकती है। ऊंट के आंसू में जो एंटीडोट्स होते हैं, उनसे सांप के जहर को खत्म करने की सबसे असरदार दवा बनाई जा सकती है। भारत और अमेरिका सहित कई देशों में ऊंट के आंसुओं पर रिसर्च चल रही है। यूएई और सऊदी अरब की कई यूनिवर्सिटीज में भी ऊंट के आंसुओं पर रिसर्च चल रही है। दुनिया के सबसे जहरीले सांपों की काट ऊंट के आंसुओं में मौजूद है। ऊंट के आंसू में विभिन्न प्रोटीन्स पाए जाते हैं। प्रोटीन्स ऊंट को इन्फेक्शन से बचाते हैं। इन आंसुओं में लाइसोजाइम्स होते हैं। ये वायरस, बैक्टीरिया और कीड़ों को रोकते हैं। एशिया और अफ्रीका में दुनिया के सबसे जहरीले सांप पाए जाते हैं। ऊंट के आंसुओं से इस जहर का एंटीडोट तैयार हो सकता है। लिवरपूल स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन में स्नेकबाइक रिसर्च करने वाले प्रोफेसर रॉबर्ट हैरिसन ने यह बात कही है। दुनिया में अभी करीब 250 प्रकार के जहरीले सांपों के जहर की ही काट मौजूद है लेकिन ऊंट की आंसुओं का यूज करके दुनिया के सबसे जहरीले सांपों की एंटीडोट तैयार हो सकती है। ऊंट की एंटीबॉडीज से सांप के जहर का एंटी-वेनम बनाने का एक और बड़ा फायदा है। किसी भी एंटी-वेनम को सुरक्षित रखने के लिए कोल्ड-चेन की आवश्यकता होती है। ऊंटों के पास गर्मी झेलने की अपार ताकत होती है। यही गुण एंटी-वेनम में आया तो उसे स्टोर करने के लिए कोल्ड-चेन की आवश्यकता नहीं होगी। ऊंट दुनिया की सबसे दुर्गम जलवायु में से एक यानी रेगिस्तान में पाए जाते हैं। यहां रेत से बचने के लिए उनकी आंखों में खास प्रोटेक्टिव सिस्टम होता है।

पीएम मोदी बोले- कुछ लोग देश को नीचा दिखा रहे, इतना शुभ हो रहा कि कुछ लोगों ने काला टीका लगाने का जिम्मा लिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि जब कहीं पर भी शुभ होता है तो काला टीका लगाने की जरूरत होती है। तो आज इतना शुभ हो रहा है कि कुछ लोगों ने काला टीका लगाने का जिम्मा लिया है। आज दुनिया मान रही है कि यह भारत का समय है। ये कालखंड देश के लिए महत्वपूर्ण है। नया इतिहास बन रहा है। आज भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। इंडिया टुडे कॉन्क्लेव में मोदी ने कहा कि जब देश संकल्प से भरा हो, जब दुनिया के विद्वान आशावान हों, इन सबके बीच निराशा की बातें करना, भारत को नीचा दिखाने की कोशिश, भारत का मनोबल तोड़ने की बातें भी होती रहती हैं।आज भारत दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। नंबर वन स्मार्ट फोन डाटा कंज्यूमर है। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल उत्पादक देश है। ऐसी कितनी ही बातों पर चर्चा होती रही है। पीएम मोदी ने कहा कि मैं 2023 की बात करता हूं। 75 दिन की ही बात करता हूं। ऐतिहासिक बजट आया, मुंबई मेट्रो रेल, बेंगलुरु मैसूर एक्सप्रेस वे, वंदे भारत, दिल्ली जयपुर एक्सप्रेस वे। इन 75 दिनों में ही हेलीकॉप्टर फैक्ट्री का उद्घाटन हुआ। इन 75 दिनों में ही यूपी उत्तराखंड में रेल बिजली रेलखंड, भारत ने दो ऑस्कर जीता, जी 20 की बैठक हो रही है। इन 75 दिनों में तुर्किए की मदद के लिए ऑपरेशन दोस्त चलाया गया।

सीबीएसई की चेतावनी-1 अप्रैल से पहले सेशन शुरू न करें

- कहा- इससे स्टूडेंट्स में चिंता और थकान पैदा होने का खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने स्कूलों को चेतावनी दी है कि वे एक अप्रैल से पहले नया एकेडमिक सेशन शुरू नहीं करें। बोर्ड ने कहा है कि इससे स्टूडेंट्स में चिंता और थकान पैदा होने का खतरा है। सीबीएसई की यह चेतावनी कई स्कूलों में खासकर कक्षा 10 और 12 के एकेडमिक सेशन शुरू होने के बाद आई है। सीबीएसई सचिव अनुराग त्रिपाठी ने आदेश में कहा, यह देखा गया है कि कुछ स्कूलों ने अपना एकेडमिक सेशन बहुत जल्दी शुरू कर दिया है जिससे कम समय में पूरे साल का सिलेबस पूरा कर लिया जाए। लेकिन इससे स्टूडेंट्स में थकान पैदा होने का खतरा है। इससे उनमें चिंता और बर्नआउट पैदा हो सकता है।

175 बेरोजगारों को नौकरी मिली

इंदौर। जिला रोजगार कार्यालय में एक दिवसीय रोजगार मेला लगा। उप संचालक रोजगार पीएस मण्डलोई ने बताया कि मेले में कुल 10 कंपनियों के प्रतिनिधियों द्वारा साक्षात्कार लेकर प्रारम्भिक रूप से प्रतिभागियों का रोजगार के लिए चयन किया गया। इस रोजगार मेले में कुल 339 युवक-युवतियों ने पंजीयन कराया। 10 कंपनियों के प्रतिनिधियों द्वारा कुल 175 युवक-युवतियों का प्रारंभिक रूप से सेल्स एग्जीक्यूटिव,ऑपरेटर, पीकर , मार्केटिंग, सर्वेयर, टीम लीडर, टेलीकॉलर, रिकवरी ऑफिसर आदि पदों के लिए चयन किया गया। जाना स्मॉल फाइनेंस कंपनी द्वारा-3, बी एबीएलई द्वारा 96, पटेल मोटर्स आईसर-7, एरेना (पटेल) सुजुकी इंदौर-14, कल्प मॉनेटरी-9, एसजीएस सिक्योरिटी-3, वन पॉइंट वन-9, जस्ट डायल इंदौर-1, इंस्टाकनेक्ट-25 एवं श्याम ऑटोमोटिव द्वारा 8 पदों के लिए

खालिस्तान समर्थक 9 साथी भी पकड़े

अमृतपाल गिरफ्तार

- मोहाली में तलवारें लेकर सड़क पर उतरे निहंग, पंजाब में इंटरनेट बंद; मुक्तसर-फाजिल्का में धारा 144

अमृतसर (एजेंसी)। खालिस्तान समर्थक अमृतपाल और उसके 9 साथियों को पंजाब पुलिस ने शनिवार को अलग-अलग जगह से गिरफ्तार कर लिया। यह गिरफ्तारियां अजनाला थाने पर हमले से जुड़े केस में की गईं। अमृतपाल के 6 साथियों को शनिवार दोपहर जालंधर से मोगा की तरफ जाते समय पकड़ा गया। यहां पंजाब पुलिस के घेरा डालते ही अमृतपाल खुद गाड़ी में बैठकर भाग निकला। पुलिस की करीब 100 गाड़ियों ने लगभग डेढ़ घंटा पीछा करने के बाद उसे जालंधर के नकोदर एरिया से दबोच लिया। हालांकि उसकी गिरफ्तारी की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई।

जालंधर-मोगा पुलिस का जॉइंट ऑपरेशन

खालिस्तान समर्थक संगठन वारिस पंजाब दे के प्रमुख अमृतपाल के खिलाफ 3 केस दर्ज हैं जिनमें से दो मामले अमृतसर जिले के अजनाला थाने में हैं। अपने एक करीबी की गिरफ्तारी से नाराज होकर अमृतपाल ने 23 फरवरी को समर्थकों के साथ मिलकर अजनाला थाने पर हमला कर दिया था। इस केस में उस पर कार्रवाई नहीं होने के चलते पंजाब पुलिस की काफी आलोचना हो रही थी। शनिवार को अमृतपाल ने जालंधर-मोगा नेशनल हाईवे पर शाहकोट-मलसियां इलाके और बठिंडा जिले के रामपुरा फूल में कार्यक्रम रखे थे। शाहकोट-मलसियां इलाके में उसके प्रोग्राम के लिए समर्थक सुबह से जुटने लगे थे। इस प्रोग्राम से पहले ही जालंधर और मोगा पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन में गुपचुप तरीके से अमृतपाल को गिरफ्तार करने की रणनीति बना ली थी। इसके लिए आसपास के कई जिलों से रातोंरात पुलिस फोर्स बुला ली गई। जालंधर-मोगा नेशनल हाईवे पर भी सुबह से ही भारी नाकेबंदी कर दी गई।

चंबल में श्रद्धालुओं पर मगरमच्छ का हमला

8 लोग बहे, अभी तक 3 शव बरामद, 5 लोग लापता

17 पदयात्री नदी पार कर कैला देवी मंदिर जा रहे थे

मुरैना/श्योपुर/सबलगढ़ (एजेंसी)। मध्यप्रदेश से कैला देवी के दर्शन करने राजस्थान जा रहे 8 श्रद्धालु चंबल नदी में बह गए। रेस्क्यू टीम को अब तक 3 शव मिले हैं। 5 लोग लापता हैं। गोताखोर उनकी तलाश कर रहे हैं। घटना मुरैना, श्योपुर और राजस्थान के बॉर्डर के बीच हुई। श्रद्धालुओं के जत्थे में 17 लोग थे। 9 लोग सुरक्षित हैं। सभी शिवपुरी जिले के तेंदुआ थानाक्षेत्र के चिलावद गांव के रहने वाले बताए जा रहे हैं। श्योपुर जिले के बीरपुर और मुरैना जिले के टेंटरा थाने से पुलिस मौके पर है। टेंटरा थाना प्रभारी धर्मेंद्र मालवीय ने बताया कि सभी श्रद्धालु एक-दूसरे का हाथ पकड़कर नदी पार कर रहे थे। जिस जगह हादसा हुआ है, वहां कोई पुल या नाव की व्यवस्था नहीं है। सबलगढ़ एसडीओपी गुरुबचन सिंह ने बताया कि अभी रेस्क्यू अभियान चल रहा है।

सीएम शिवराज ने दुख व्यक्त किया

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हादसे पर दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने रेस्क्यू ऑपरेशन में तेजी के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री कार्यालय से रेस्क्यू की मॉनिटरिंग की जा रही है।

मुस्लिम कर्मियों के लिए नीतिश सरकार ने दे दिया बड़ा तोहफा

रमजान में बिहार के सरकारी दफ्तरों का सीएम ने बदला टाइम टेबल

एक घंटे पहले ऑफिस आकर,तय वक्त से पहले निकलने की दी छूट

पटना (एजेंसी)। रमजान का महीना शुरू होने वाला है। ऐसे में बिहार की नीतिश कुमार सरकार ने मुस्लिम अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने एक सर्कुलर जारी किया है जिसके बाद रमजान में मुस्लिम कर्मचारियों और अधिकारियों को निर्धारित समय से एक घंटे पहले ऑफिस आने की अनुमति होगी। यही नहीं वो फिर तय समय से एक घंटे पहले कार्यालय से निकल भी सकेंगे। यानी तय टाइमिंग से एक घंटे पहले उन्हें घर जाने की अनुमति रहेगी। राज्य सामान्य प्रशासन विभाग ने इस संबंध में आदेश जारी किया है। सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से जारी सर्कुलर के मुताबिक, सरकार ने रमजान के महीने में मुस्लिम कर्मचारियों और अधिकारियों की सुविधा के मद्देनजर ये फैसला लिया है।

बीजेपी ने उठाए सवाल, जेडीयू-आरजेडी फैसले के साथ

नीतिश सरकार के इस आदेश पर बीजेपी ने पलटवार किया है। उनका कहना है कि मुस्लिम वोटरों को साधने के लिए सीएम नीतिश ने ये फैसला लिया है। बीजेपी नेता अरविंद कुमार सिंह ने मांग की है कि चैत्र नवरात्रि और राम नवमी के मद्देनजर भी सरकार को ऐसे ही सर्कुलर जारी करना चाहिए।

इमरान के घर पर पुलिस ने चलाया बुलडोजर

- इस्लामाबाद कोर्ट में पेशी पर जाते वक्त बोले-मेरी गिरफ्तारी की साजिश

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान तोशाखाना मामले में सुनवाई के लिए इस्लामाबाद कोर्ट पहुंच गए हैं। इधर उनके निकलते ही पुलिस लाहौर में उनके घर जमान पार्क में घुस गई। यहां पुलिस ने बुलडोजर से गेट तोड़ा और घर के अंदर दाखिल हुई। इस दौरान पुलिस की पीटीआई कार्यकर्ताओं से झड़प हुई। पुलिस ने लाठीचार्ज किया है और करीब 20 लोगों को गिरफ्तार किया। इस कार्रवाई पर इमरान ने ट्वीट कर कहा- पंजाब पुलिस मेरे पीछे से घर पहुंची है। मेरी बीवी वहां अकेली है। दूसरी तरफ, रॉयटर्स को दिए इंटरव्यू में इमरान ने खुद की गिरफ्तारी की आशंका जताई।

'मिशन-2024' की तैयारियों में जुटीं सीएम ममता बनर्जी

ओडिशा के सीएम नवीन पटनायक से करेंगी मुलाकात, मांगेंगी

- विपक्षी पार्टियों को जोड़ने का है बड़ा प्लान, कांग्रेस से बनाएंगी दूरी

कोलकाता (एजेंसी)। मिशन-2024 के लिए देश में विपक्षी दलों के एकजुट होने की तैयारी में है। बिना कांग्रेस की मदद लिए केंद्र की बीजेपी सरकार को हटाने की कवायद शुरू हो गई है। शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात की। दोनों के बीच थर्ड फ्रंट को लेकर चर्चा हुई। दोनों ने औपचारिक रूप से स्वीकार की किया सपा और तृणमूल एक साथ मिलकर काम करेंगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के ही हम बीजेपी हटाने का काम करेंगे। इसके लिए क्षेत्रीय दलों से भी बात करेंगे। तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और लोकसभा सदस्य सुदीप बंदोपाध्याय ने कहा, ममता बनर्जी 23 मार्च को नवीन पटनायक से मुलाकात करेंगी। इसके लिए वह जल्द ही उड़ीसा जाएंगी। भुवनेश्वर से कोलकाता के लिए उड़ान भरने से पहले बनर्जी के बीजू जनता दल (बीजेडी) के अध्यक्ष पटनायक से मिलने की संभावना है।इस दौरान पुरी मंदिर के दर्शन भी करेंगी। दोनों नेता 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए विपक्षी एकता पर चर्चा कर सकते हैं।राज्य सचिवालय सूत्रों ने बताया कि बनर्जी के 21 मार्च की शाम को ओडिशा रवाना होने और अगले दिन पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर में पूजा करने की संभावना है।

हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट कोई सरकार नहीं हैं...

जजों की नियुक्ति वाले सवाल पर किरण रिजिजू की खरी-खरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यायपालिका से लेकर कलेजियम सिस्टम तक जैसे मुद्दों पर केंद्रीय किरण रिजिजू चर्चा में हैं। शनिवार को भी उन्होंने एक निजी चैनल के कार्यक्रम में भी इन्हीं सब मुद्दों पर बात की। इसके अलावा उन्होंने सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के जजों की नियुक्तियों पर बोलते हुए रिजिजू ने कहा कि वह कोई सरकार नहीं हैं। उनके पास जजों की कई तरह की शिकायतें आती हैं। जजों की छुट्टियों को जायज ठहराते हुए रिजिजू ने कहा कि जजों को भी छुट्टियां मनानी चाहिए। उन्होंने राहुल गांधी पर लंदन वाले उनके बयान पर भी तीखा हमला किया। केंद्रीय कानून मंत्री किरण रिजिजू ने निजी चैनल से बातचीत के दौरान जजों की छुट्टियों वाले सवाल पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि जहां तक जजों की छुट्टियों की बात है तो यह मुद्दा पिछले साल भी संसद में उठा था।

अचानक फटा बम और सब धुआं-धुआं हो गया...

उमेश पाल मर्डर केस की सामने आई नई सीसीटीवी फुटेज

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में बहुचर्चित उमेश पाल हत्याकांड का एक और सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। हत्याकांड की यह सीसीटीवी फुटेज जीटी रोड की है। इस सीसीटीवी फुटेज में हमलावर कार से जाते दिख रहे हैं। अचानक रोड पर बम गिरने से आम जनता में अफरा-तफरी मचती नजर आ रही है। 24 फरवरी को उमेश पाल की हत्या के दिन से इस सीसीटीवी फुटेज में देखा जा सकता है कि बीच बाजार में अचानक बम आकर फटा। इसके बाद लोग जान बचाकर इधर-उधर भागते हुए नजर आए। बाइक सवार, सब्जी के ठेले वाला और अन्य राहगीर भागते दिखे। इससे कुछ सेकेंड पहले ही सभी शूटर्स कार और बाइक से जाते दिखाई पड़े। सीसीटीवी में कथित तौर पर गुड्डू मुस्लिम और अरमान बाइक पर जाते दिखे हैं। दोनों ही उमेश पाल मर्डर केस के मुख्य आरोपी और 5 लाख इनामिया बदमाश हैं। बाइक से जाते वक्त गुड्डू मुस्लिम ने बमबाजी की। डॉन अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन पर उमेश पाल हत्याकांड की साजिश रचने का आरोप लगा है।

गजब गुजरात!

केसुडा के फूलों ने बढ़ाई केवाडिया, गिर और जांबूघोड़ा की सुंदरता

गुजरात एक ऐसा राज्य है। जो काफी विविधिता से भरा हुआ है, लेकिन इन दिनों गुजरात के कई जिले और पर्यटन स्थल केसरिया रंग में रंगे हुए हैं। विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा के स्थल केवाडिया में बाकायदा केसरिया हुए वातावरण का जश्न मनाया जा रहा है और केसरिया खूबसूरती को निहारने के लिए विशेष टूर चल रहा है। केवाडिया क्षेत्र में 65,000 से अधिक केसुडा के पेड़ हैं। जिन्हें संस्कृत में पलाश, खाखरा या किशुका के नाम से भी जाना जाता है। इस पेड़ के फूल का केसरिया रंग पूरे एकता नगर की खूबसूरती में चार चांद लगा देता है। केवाडिया में हर साल स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के इर्द-गिर्द केसुडा टूर होता है। केसुडा के फूलों से प्राकृतिक केसरिया रंग भी निकाला जाता है। केसुडा टूर को फ्लेम ऑफ फॉरेस्ट के नाम से भी जाना जाता है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के आसपास होने वाले टूर में पर्यटकों को वन्य विरासत से रूबरू कराया जाता है। गुजराती में केसुडा, हिंदी में ढ़ाक और बंगाली में पलाश के नाम से जाना जाता है, लेकिन ऐसा कहा जाता है कि इस पेड़ के फूलों के केसरिया रंग से होली खेलने पर कालसर्प योग चला जाता है। गिर में केसुडा के काफी संख्या में पेड़ है। केसुडा के पेड़ों में फूल आने वर गिर का नजारा भी अद्भुत हो जाता है।

भोपाल की करोंद फल-सब्जी मंडी में आग लगी

आधे घंटे में 3 दमकल ने बुझाई आग, पास की दुकानें जलने से बची

भोपाल (नप्र)। भोपाल की करोंद फल-सब्जी मंडी में शनिवार दोपहर आगजनी की घटना हुई। अज्ञात कारणों से फल दुकान में आग लग गई। इसे बुझाने में 30 मिनट लगे और 3 दमकलें लगी। आग से पानी की दुकानें जलने से बच गई, क्योंकि वे इससे सटी नहीं थी। इस कारण आग की चपेट में

आने से बच गई। इधर, मिसरोद स्थित एक टूव्हीलर शोरूम में भी आगजनी का मामला सामने आया है। इस कारण शोरूम का सामान जलकर राख हो गया। पांच से छह दमकलों ने आग पर काबू पाया।

फर्नीचर जला, तरबूज बचे

फायर फाइटर यादव ने बताया कि दुकान में फर्नीचर रखा था, जो पूरी तरह से जल गया। वहीं, तरबूज बच गए। दुकान में आग काफी भीषण लगी थी। यदि पास में दुकान सटी हुई होती तो वे भी चपेट में आ सकती थी।

एमपी बोर्ड पेपर लीक गिरोह का सदस्य गिरफ्तार

टेलीग्राम ग्रुप के जरिए बेचे पेपर, ऐसे 12 ग्रुप एक्टिव, 35 हजार स्टूडेंट्स इनसे जुड़े

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में माध्यमिक शिक्षा मंडल की परीक्षाओं के पेपर सोशल मीडिया के जरिए पेपर बेचने वाले गिरोह का क्राइम ब्रांच ने भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने शनिवार को एक आरोपी को गिरफ्तार भी किया है। आरोपी के टेलीग्राम ग्रुप में बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले 35 हजार स्टूडेंट्स मिले हैं। आरोपी से प्रारंभिक पूछताछ में खुलासा हुआ है कि उसने अकेले 600 स्टूडेंट्स से करीब साढ़े 3 लाख रुपए ठगे हैं। इधर, शनिवार को भोपाल में एमपी बोर्ड के 12वीं का पेपर लीक करने के आरोप में दो पर्यवेक्षकों को भी गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस इसी गिरोह से जुड़े एक अन्य आरोपी को कस्टडी में लेकर भी पूछताछ कर रही है। जबकि, दो आरोपियों की तलाश में पुलिस टीम सर्च कर रही हैं। पुलिस को अब तक 10-12 टेलीग्राम ग्रुप की जानकारी मिली है, जिनमें पेपर बेचने का गोरखधंधा चल रहा है। आरोपी पिछले दो साल से इस तरह की ठगी को अंजाम दे रहा था। पुलिस उससे अन्य परीक्षाओं को लेकर भी पूछताछ कर रही है।

डीसीपी क्राइम ब्रांच अमित कुमार ने बताया कि मंडीदीप, रायसेन निवासी कौशिक दुबे पिता श्याम कुमार दुबे को गिरफ्तार किया है। वह बी काम थर्ड ईयर का स्टूडेंट है। आरोपी ने टेलीग्राम ग्रुप में बोर्ड एग्जाम पेपर का एक लिंक जनरेट कर 600 से 1000 रुपए में स्टूडेंट को बेचा। आरोपी के पास 1 बैंक पासबुक, मोबाइल, 2 सिमकार्ड बरामद हुए हैं। बता दें, शुक्रवार को 10वीं का अंग्रेजी का पेपर भी लीक हुआ था।

इससे पहले 1 मार्च से ही सोशल मीडिया पर लगातार बोर्ड की परीक्षाओं के पर्चे लीक किए जा रहे हैं। हालांकि, इस मामले में बोर्ड ने 4 मार्च को पुलिस कमिश्नर भोपाल को शिकायत की थी।

अब तक 9 केंद्राध्यक्षों व सहायक केंद्राध्यक्षों पर कार्रवाई

- हुकुम चंद लिटोरिया, प्रचार्य, शासकीय हाई स्कूल सिगौरा ब्लॉक घाटीगांव, जिला ग्वालियर।
- बल सिंह चौहान, शिक्षक, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बोकराटा, बड़वानी।
- दिलीप सिंह अवस्या, शिक्षक, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लिंबी, बड़वानी।
- रमाशंकर अहिरवार, टीचर, शासकीय उच्चतर माध्यमिक ईंटखेड़ी, रायसेन।
- निर्भय सिंह मवैदी, टीचर, शासकीय उच्चतर माध्यमिक बीकलपुर, रायसेन।
- रेखा बैरागी, टीचर, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जीरापुर राजगढ़।
- राम सागर शर्मा, टीचर, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजगढ़।
- विवेक कुमार लिटोरिया, टीचर, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लश्कर जिला ग्वालियर।
- धनराज पाटीदार, टीचर, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पीपल्याकुलसी, राजगढ़।

भोपाल में आज 4 से 6 घंटे बिजली गुल रहेगी

- बागसेवनिया, शांतिनगर, अरेरा ई-2 में मेंटेनेंस होगा, मिसरोद, सेक्टर डी-ई में भी सप्लाई नहीं

भोपाल (एजेंसी)। राजधानी भोपाल के कई इलाकों में 19 मार्च, रविवार को 4 से 6 घंटे तक बिजली गुल रहेगी। इन इलाकों में बिजली कंपनी मेंटेनेंस करेगी। इसके चलते सप्लाई बंद रखी जाएगी। बिजली कंपनी के अनुसार, रविवार

को करीब 15 इलाकों में मेंटेनेंस किया जाएगा। इस कारण सप्लाई बंद रहेगी। बिजली गुल रहने से लोगों को परेशानी हो सकती है। उनसे जुड़े कई काम भी प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए लोग जरूरी काम पहले से निपटा लें। ताकि, उन्हें किसी प्रकार की दिक्कत न हो।

कब, कहां सप्लाई नहीं

सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक अरेरा ई-2, कोतवाली रोड, पारस सिटी, यूनानी सफा खाना एवं आसपास के इलाकों में सप्लाई नहीं होगी। सुबह 10 से शाम 5 बजे तक बाग सेवनिया, उत्सव परिसर, मिसरोद फेस-1, सेक्टर डी-ई, कोलार कॉलोनी, दुर्गा नगर, शांतिनगर एवं आसपास के इलाकों में बिजली गुल रहेगी।

ब्रम्होस को छोटा करके सुखोई से दुश्मन के ठिकाने पर किया जा सकेगा हमला

38वीं मप्र युवा वैज्ञानिक कांग्रेस एवं साइंस फेस्टिवल में आये विशेषज्ञ त्रिभुवननाथ शर्मा ने कहा

सुबह सवेरे, भोपाल।

मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद और एसएटीआई कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 38वीं मप्र युवा वैज्ञानिक कांग्रेस एवं साइंस फेस्टिवल के दूसरे दिन शनिवार को विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों पर चर्चा हुई। ब्रम्होस एयर स्पेश इंडिया-रशिया ज्वाइंट वेंचर के हेडक्वार्टर दिल्ली से आए सिस्टम मैनेजर त्रिभुवननाथ शर्मा ने ब्रम्होस मिसाइल के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि सुपर सोनिक ब्रम्होस मिसाइल का अभी वजन तीन टन है। इसकी हाइट आठ मीटर है और इसकी मारक क्षमता 300 किमी है। इसका वजन और हाइट ज्यादा होने के कारण यह मिसाइल सुखोई विमान में लगाकर दुश्मन के ठिकाने तक नहीं ले जाई जा सकती। इसलिए दिल्ली स्थित ब्रम्होस एयर स्पेश इंडिया-रशिया ज्वाइंट वेंचर के हेडक्वार्टर में इसके वजन और लम्बाई को कम करने पर रिसर्च चल रही है जिससे इसे जमीन के साथ ही हवा और पानी में भी हमला करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

दोनों तरह से हुआ शोधपत्रों का प्रजेंटेशन

देशभर से आए शोधकर्ताओं ने शोधपत्र प्रस्तुत किये। इस दौरान कुछ प्रतिभागियों ने ऑनलाइन प्रजेंटेशन भी दिया। रिसर्च पेपर प्रजेंटेशन में इंदौर के परमाणु ऊर्जा विभाग अनुसंधान संकुल, आरआरसीएटीए आईआईटी, डीएवीवी, एमवीएम, भोपाल के आईआईएसईआर एआईएमएस, एएमपीआरआई, आईसीएके, एमएएनआईटी, आरजीपीवी, ग्वालियर के एएमआईटीवाय, जबलपुर के जेएनकेवी, पीडीपीएम, सागर के हरिसिंह गौर यूनिवर्सिटी, एसएटीआई विदिशा सहित अनेक संस्थाओं के शोधार्थियों ने अपने-अपने रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए।

ब्रम्होस मिसाइल बनी आकर्षण का केन्द्र

फेस्टिवल के दौरान लगाई गई विशेष प्रदर्शनी में ब्रम्होस मिसाइल के मॉडल को करीब से देख बच्चे आकर्षित हुए। रीजनल साइंस सेंटर फॉर भोपाल से आए क्लीन एनर्जी-ग्रीन एनर्जी नामक चलित विज्ञान प्रदशर्नी वाहन में भीतर दोनों तरफ और बाहर की तरफ करीब तीन दर्जन विज्ञान के चमत्कार को दिखाने वाले मार्डल लगे हुए थे। जिसमें एक मार्डल में बताया गया कि किस तरह कोई भी व्यक्ति बायें हाथ से कॉपर पाइप और दायें हाथ से एल्युमिनियम का पाइप पकड़कर बिजली उत्पन कर सकता है। इस मॉडल पर अपने दोनों हाथों से बिजली उत्पादन क्षमता देखने लोगों की भीड़ लगी रही। वहीं एक मॉडल में पवन चक्की के संबंध में तो अन्य मॉडल में उछलने वाली चकती, सौर ऊर्जा निर्माण, रासायनिक ऊर्जा निर्माण, यांत्रिक ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा बनाना, विकिरण ऊर्जा निर्माण आदि के संबंध में मॉडल के माध्यम से विस्तार से प्रैक्टिकली बताया गया। वहीं विज्ञान संबंधी प्रश्नोत्तरी भी एक मॉडल में बताई गई थी। जिसके प्रत्येक प्रश्न का सही जवाब देने पर 10 अंक मिल रहे थे।

- **बच्चों के लिए लगाई विशेष प्रदर्शनी–** मेपकास्ट की ओर से विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कोर्डिनेटर निरंजन शर्मा एवं शिवनारायण रजक, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने बताया कि परिषद ने फिजिक्स के सिद्धांतों पर आधारित खिलौने तैयार किये हैं जिन्हें बच्चे बहुत पसंद कर रहे हैं। इसमें आर्टिकल टेबिल, वैल्यू ऑफ पाई, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक टेलीस्कोप, फोजेन शेडो, टेन ग्राम, डबल पेरी स्कोप जैसे 16 गेम्स बच्चों के लिए डिस्प्ले किये गये है। रजक ने बताया कि हमारा उद्देश्य है लर्न और फन के माध्यम से बच्चों को फिजिक्स की बारीकियां बताना।
- **साइंस फिल्म मेकिंग बाय मोबाइल कार्यशाला–** महोत्सव में साइंस फिल्म मेकिंग बाय मोबाइल कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें लगभग 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया रिसोर्स पर्सन के रुप में डॉक्टर सुधीर और राजू कुमार ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। सुधीर कुमार ने स्क्रिप्ट राइटिंग के बारे में विद्यार्थियों से विस्तृत रूप से चर्चा की गई। राजीव कुमार ने विद्यार्थियों को मोबाइल के द्वारा किस तरह से साइंस फिल्मों का निर्माण किया जाता है इसके बारे में विस्तृत जानकारी लाइव डेमोस्ट्रेशन के माध्यम से दी कार्यशाला में मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक डा.. अनिल कोठारी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए इस उन्नत तकनीकी के माध्यम से साइंस फिल्म निर्माण के बारे में जानकारी प्रदान की गई।
- **युवा वैज्ञानिकों की जिज्ञासाओं के लिए समाधान–** नेशनल इंस्टीटयूट आफ डिजाइन भोपाल डॉ धीरज, एनपीटीआई फरीदाबाद डीजी डॉ तृप्ता ठाकुर, भोपाल के भुवनेश साहू, आकाश ठाकुर, प्रवीण रामदास, डॉ साकेत सिंह कौरव सहित कई जाने माने विषय विशेषज्ञों ने फेस टू फेस इंट्रेक्शन में विद्यार्थियों की जिज्ञासा का समाधान किया किया और उनके प्रश्नों के समाधान किए गए। वहीं शाम सात बजे ओपन मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान विद्यार्थियों के साथ ही देशभर से आए शोधकर्ताओं और युवा वैज्ञानिकों ने भी रंगारंग प्रस्तुतियां दीं।
- **पुरस्कार वितरण के साथ आज होगा समापन–** तीन दिवसीय इस महोत्सव का समापन आज रविवार को पुरस्कार वितरण के साथ होगा। सुबह साढ़े दस बजे से जहां विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन होगा। वहीं इसके साथ ही विज्ञान वर्कशॉप, विशेषज्ञों से सीधा संवाद, वैज्ञानिक मॉडल प्रतियोगिता और डिजिटल प्लेनेटेरियम के साथ ही साढ़े ग्यारह बजे पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन होगा।

तारामंडल और ब्रम्हांड की जानकारी मिली

इस विज्ञान महोत्सव में लोगों को पता चला कि दुनिया में जो हमें दिखता है सिर्फ वही एक चांद नहीं दुनिया में कई चांद और मौजूद हैं। इनमें बृहस्पति ग्रह के पास जहां अपने 68 चांद हैं, तो शनि गृह पर 48 और इसी तरह अन्य चांद ब्रम्हांड में मौजूद हैं। कैलाश सत्यार्थी हॉल में रखे विभिन्न विज्ञान मॉडल के साथ ही तारामंडल और ब्रम्हांड की यह जानकारी नागरिकों को दी गई। यहां कपड़े से बॉल के बड़े आकार वायु से फूला हुआ गो टू प्लेनेट नाम से एक मॉडल बनाया गया जिसके भीतर करीब दर्जनभर लोगों के बैठने का इंतजाम था। इसमें चारों तरफ अंधेरा रहता है। इसमें रखे एक प्रोजेक्टर के माध्यमसे ब्रम्हांड की उत्पत्ति और तारा मंडल, आकाश गंगा, सहित पृथ्वी, सूर्य, शनि आदि के संबंध में करीब 10 मिनिट की डॉक्यूमेंट्री फिल्म के माध्यम से विस्तार से बताया गया। एसएटीआई परिसर में अलग-अलग शहरों से आये कलाकारों ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया।

बजट से पहले विपक्ष ने पुराना हिसाब मांगा

21 मार्च को पेश होगा भोपाल निगम का बजट, कई मुद्दों पर 'शहर सरकार' को घेरेंगे कांग्रेसी

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम की बजट मीटिंग 21 मार्च को होगी। इसमें 3200 करोड़ रुपए से ज्यादा का बजट पेश हो सकता है। इस बजट से पहले विपक्ष ने 'शहर सरकार' से पुराना हिसाब मांगा है। जनता से जुड़े कई मुद्दों पर भी कांग्रेसी पार्षद घेरने की रणनीति बना रहे हैं।

बता दें कि बजट मीटिंग में पूर्व सीएम स्व. बाबूलाल गौर और ग्रुप कैप्टन शहीद वरुण सिंह के नाम पर सड़कें होंगी, जबकि ऐशबाग स्टेडियम का नाम भोपाल के पूर्व सांसद और वरिष्ठ भाजपा नेता स्व. कैलाश नारायण सारंग के नाम से करने का प्रस्ताव भी लाया जाएगा। इसके अलावा नीमच में प्रस्तावित विंड प्रोजेक्ट को फिर से मीटिंग में रखने का प्लान है। अबकी बार किसी भी प्रकार के टैक्स में बदलाव नहीं किया जा रहा है। नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी का कहना है कि बजट मीटिंग से पहले हमने पुनरीक्षित बजट का हिसाब मांगा है। मीटिंग का एजेंडा तो जारी हो चुका है, लेकिन जनता से जुड़े मामलों को शामिल नहीं किया गया है।

9 बिंदुओं को बजट में शामिल करने को कहा है– नेता प्रतिपक्ष जकी का कहना है कि बजट मीटिंग में 9 बिंदुओं को शामिल करने के लिए पहले ही महापौर को लेटर दे चुके हैं। इसे भी मीटिंग में शामिल किया जाना चाहिए। ताकि, जनता से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हो सके।

जनता पर कोई अतिरिक्त टैक्स न बढ़ाया जाए।

महापौर ने अपने संकल्प पत्र में जो वादा किया था, उसके अनुसार उपभोक्ता करों को कम किया जाए। 85 वार्ड की समस्याओं के समाधान करने के लिए बजट राशि आवंटित की जाए।
बल्क नल कनेक्शन के स्थान पर व्यक्तिगत कनेक्शन देने और सीवेज सिस्टम ठीक करने के लिए बजट में प्रावधान किया जाए।

शहर में शेल्टर हाउस बनाए जाए

पार्षद निधि राशि 50 लाख रुपए की जाए। पार्षद निधि के वार्षिक टेंडर की प्रोसेस व्यवस्थित नियमानुसार की जाए, या चार लाख रुपए तक के टेंडर पूर्व की तरह जोन स्तर से कराए जाए। ताकि, विकास कार्यों में प्रगति आ सकें।
जिन क्षेत्रों में सीवेज सिस्टम सुधारने का काम नहीं हो सका है, वहां के लिए टेंडर लगवाए जाए। प्रत्येक पार्षद से वार्ड अनुसार प्रस्ताव लेकर बजट में शामिल किए जाए। शहर की लाइट व्यवस्था को सुधारने के लिए हर वार्ड को लाइट उपलब्ध कराई जाए।
सर्वदलीय मीटिंग भी नहीं हुई– मीटिंग को लेकर एजेंडा तो चार दिन पहले ही जारी हो चुका है, लेकिन बजट की जानकारी अब तक सामने नहीं आई है। अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी को भी अब तक जानकारी नहीं मिल पाई है। इस कारण सर्वदलीय मीटिंग नहीं बुलाई गई है। इधर, विंड प्रोजेक्ट का प्रस्ताव फिर से लाने को लेकर भी नाराजगी सामने आ सकती है।

गिर सकता है भोपाल का भारत टॉकीज ब्रिज

49 साल पुराना हुआ, 29 स्लैब में लगे 336 बियरिंग-पेडस्टल खराब, फिर भी ट्रैफिक चालू

भोपाल (नप्र)। भोपाल स्टेशन के प्लेटफॉर्म 1 की ओर जाने वाला 49 साल पुराना भारत टॉकीज ब्रिज कभी भी गिर सकता है। ब्रिज के 28 पिलर्स पर बिछे 29 स्लैब में लगे 336 बियरिंग और इतने ही पेडस्टल खराब हो चुके हैं। 1974-75 में हुए निर्माण के बाद से अब तक ब्रिज पर 16 बार डामरीकरण हो चुका है। छह महीने पहले ब्रिज की रिपेयरिंग के लिए डामर उखाड़ा गया। एक-एक स्लैब पर 119 टन डामर था। यानी यहां से 3451 टन डामर निकाला गया। डामर निकालने की इस प्रक्रिया में बियरिंग और पेडस्टल और खराब हो गए। रिपेयरिंग के लिए 16 मार्च से दो माह के लिए ट्रैफिक बंद करना था। डायवर्जन प्लान भी जारी हो गया था। बदले हुए ट्रैफिक प्लान का तीन दिन तक ट्रायल होना था। लेकिन, अंतिम समय में इसे टाल दिया गया। ब्रिज की स्लैब को संभाले रखने वाले पिलर्स के ऊपर जो कैप लगी होती है, उन्हीं में कई जगह क्रेक दिखाई दे रहे हैं। इसी कैप पर पेडस्टल और बियरिंग के जरिए स्लैब टिके रहते हैं। ऐसे में ये क्रैक खतरनाक हो सकते हैं।पेडस्टल और स्लैब के बीच की बियरिंग कई जगहों पर गायब हो चुकी या खराब हो चुकी है। ये बियरिंग झटकों से बचाती है।

व्यापारी को स्क्रेप कारोबार के नाम पर ठगा

ग्वालियर के लोहिया बाजार के व्यापारी से भोपाल के कारोबारी ने 10 लाख रुपए ठगे

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के एक व्यापारी को भोपाल के कारोबारी ने आयरन स्क्रैप कारोबार के नाम पर 10 लाख रुपए का चूना लगाया है। भोपाल की फर्म ने ग्वालियर के व्यापारी से 10 लाख रुपए लेकर आयरन स्क्रैप की डील की थी। रुपए लेने के बाद कारोबारी ने स्क्रैप नहीं दिया न ही अब रुपए लौटा रहा है। घटना सितंबर 2022 से अभी तक की है। भोपाल का करोबारी न तो माल भेज रहा है और रुपए मांगों तो हर बार कोई बहाना बनाकर नई डेट दे देता है।
पीड़ित व्यापारियों ने भोपाल में मामले की शिकायत की है। साथ ही ग्वालियर में भी एफआईआर दर्ज कराने शिकायत कर रहे हैं। शहर के लोहिया बाजार निवासी पूरनचंद जैन की मैसर्स महावीर स्टील के नाम से फर्म है। उनके व्यापारिक संबंध भोपाल के बैरागढ़ निवासी राजकुमार अग्रवाल के साथ थे। राजकुमार अग्रवाल ने सितंबर 2021 में ग्वालियर के व्यापारी पूरनचन्द्र और उनके पार्टनर को भोपाल के मेसर्स अम्बा सेल नाम की फर्म के संचालक सुमित कुमार से कराई थी। दोनों फर्म के बीच स्क्रैप खरीदने को लेकर डील हुई थी। ग्वालियर के व्यापारी ने अपनी फर्म महावीर स्टील व पार्टनर वैशाली इंटरप्राइजेज के जरिए व्यापारी सुमित कुमार की फर्म को लगभग 16 लाख रुपए आयरन स्क्रैप कारोबार के लिए 31 सितंबर 2021 में ग्वालियर से ऑनलाइन पेमेंट किए थे।

कविता

– कारुलाल जमड़ा 'कारुण्य'

कई क़िताबें

कई क़िताबें पढ़ी ही नहीं गई
और न पढ़े गये कवि
वे अनमोल थी।

वे हो सकती थी 'बेस्ट सेलिंग'
पर नहीं बन पायी मार्केटिंग का हिस्सा
उन्हें भावनाओं ने ही पढ़ा

कई क़िताबें पढ़ी ही नहीं गई
जो दी गई थी बड़े मनोयोग से जौहरी को
रद्दी में नज़र आई कुछ दिनों के भीतर।

कई क़िताबें पढ़ी ही नहीं गई
चर्चा में आई और चर्चा में ही दफ़न हो गई
चर्चे थे तो केवल शीर्षक के

कई अनमोल क़िताबें
सिर्फ़ आती है और जाती है
पढ़ी नहीं जाती।
****

आंखों का विस्तार

विवेक कुमार मिश्र

यहां से वहां तक
संसार अपने विस्तार में
आंखों का ही रूप संसार है
आंखें देखती हैं रचती हैं
और संसार से
जोड़ने का काम करती हैं
जहां तक हमारे कदम बढ़ते

आंखों के ही रूप बन चलते हैं
आंखें रुकती नहीं है
बस अपना विस्तार
रचती चली जाती हैं
जो विस्तार है
आंखों का विस्तार है
जो आकाश है
आंखों का ही आकाश है
आंखें ही रचती रहती संसार
आसपास का विस्तार
और वह सब जो दुनिया में है
वह सब आंखों का ही विस्तार है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि. करोंद भानपुर बायपास रोड, भोपाल से मुद्रित एवं बी-208 शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

उधार की ज़िंदगी

कहानी

सतीश सिंह

बागुल से संजीव की पहली मुलाक़ात 16 नवंबर 2016 को हुई थी। उसी दिन उसने विभाग में योगदान दिया था। पहली ही मुलाक़ात में संजीव को बागुल दिलचस्प कैरेक्टर लगा था, क्योंकि ऑफिस में घुसते है, उसने उसे शॉल, एक किलो काजू कतली और पगड़ी जबर्दस्ती दे दी थी। लाख मना किया था संजीव ने, लेकिन नहीं माना था बागुल। कहा, सर, मेरे बेटे की 14 नवंबर को शादी हुई थी, सभी मेहमानों को मैंने उपहार दिया है, बड़े साहब को भी और सभी सहकर्मियों को भी,आप भले ही आज जॉइन किए हैं, लेकिन आपको यह लेना पड़ेगा।

संजीव ऑफिस पहुँचा ही था कि मुकेश ने रूआँसे स्वर में कहा कि बागुल आज तड़के 4 बजे ऑफ हो गया। चूँकि,मुकेश जानता था कि संजीव सर बागुल के हमदर्द हैं,इसलिए, संजीव सर को देखते ही, मुकेश उन्हें बागुल के ऑफ होने की सूचना देता है। संजीव को मुकेश की बातों पर एकबारगी से यकीन नहीं होता है। उन्होंने मुकेश से कहा, तुम्हें किसने बताया, 4 दिन पहले ही तो वह ऑफिस आया था,देखने में स्वस्थ लग रहा था, हमने साथ में चाय भी पी थी,तुम ठीक से पता करो, उसके या उसके बेटे के मोबाइल पर फोन करो। सही खबर है, सर, उसके दो मित्रों से मैंने इस खबर की पुष्टि की है, मुकेश ने गमगीन स्वर में कहा।

बागुल से संजीव की पहली मुलाक़ात 16 नवंबर 2016 को हुई थी। उसी दिन उसने विभाग में योगदान दिया था। पहली ही मुलाक़ात में संजीव को बागुल दिलचस्प कैरेक्टर लगा था, क्योंकि ऑफिस में घुसते है, उसने उसे शॉल, एक किलो काजू कतली और पगड़ी जबर्दस्ती दे दी थी। लाख मना किया था संजीव ने, लेकिन नहीं माना था बागुल। कहा, सर, मेरे बेटे की 14 नवंबर को शादी हुई थी, सभी मेहमानों को मैंने उपहार दिया है, बड़े साहब को भी और सभी सहकर्मियों को भी,आप भले ही आज जॉइन किए हैं, लेकिन आपको यह लेना पड़ेगा। संजीव ने भी बागुल के हाथों में 1100 रुपए रख दिया और कहा, मेरे तरफ से बहू को शगुन के तौर पर दे देना।

संजीव को कार्यालय में योगदान दिये हुए कुछ दिन हो गये थे,वह सभी सहकर्मियों से बात करने में सहज हो गया था,एक दिन वह अपनी सीट पर बैठकर चाय पी रहा था, तभी संजीव के सीनियर कलीग सत्येंद्र सर,उसके बगल में आकर बैठ गए और कहा, ÷संजीव, बागुल को कभी उधार नहीं देना,वह पैसे लेने के बाद कभी वापिस नहीं लौटाता है। ऐसा क्यों, संजीव ने पूछा। सत्येंद्र सर ने कहा, दरअसल, उसने बहुत ज़्यादा उधार ले रखा है,उसकी सैलरी तो लोन की किस्त और ब्याज चुकाने में ही खत्म हो जाती है, ओवरटाइम के पैसे से किसी तरह से वह घर चला पाता है। कौन-कौन हैं उसके घर में÷, संजीव ने पूछा। ÷उसकी एक बेटी और दो बेटे हैं, बेटी की शादी वह पहले ही कर चुका है,बड़े बेटे की शादी हाल में उसने की है, सत्येंद्र सर ने कहा।

दिल का बहुत ही अच्छा था बागुल, लेकिन ज्यादा उधारी लिए हुए होने की वजह से वह हमेशा तनाव में रहता था और पैसे के लिए वह छोटे-मोटे फर्जी काम करने से भी गुरेज नहीं करता था। एक बार बागुल अपनी वाइफ का फर्जी मेडिकल बिल लेकर संजीव के पास पहुँच गया था,प्रिसक्रिप्शन देखकर ही संजीव को शक हो गया था। खराब छपाई की वजह से नकली लग रहा था वह। संजीव ने जब डॉक्टर से बात की तो पता चलाकि बागुल की वाइफ ने कथित डॉक्टर से कभी ईलाज नहीं करवाया है। पैथोलेजी और एक्सरे के बिल भी नकली थे। इसी तरह से भविष्य निधि से एडवांस लेने के लिए बागुल ने छोटे बेटे की शादी की फर्जी वैवाहिक पत्रिका छपवा ली थी, क्योंकि पीएफ एडवांस बच्चों की पढ़ाई या विवाह या फिर गंभीर बीमारी के ईलाज के लिए दिया जाता है। जब बागुल ने वैवाहिक पत्रिका के साथ पीएफ एडवांस के लिए आवेदन दिया तो वैवाहिक पत्रिका की छपाई देखकर संजीव को फिर से शक हुआ। जब उसने कड़ाई से बागुल से पूछताछ की तो उसने तुरंत सच उगल दिया, क्योंकि वह आदतन अपराधी नहीं था।

बागुल की आपराधिक मानसिकता के बावजूद, संजीव ने उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करने के लिए कभी अनुशंसा नहीं की। हमेशा उसे बचा लिया, क्योंकि संजीव को बागुल दिल का अच्छा आदमीलगता था। हालांकि,बागुल गलत था, फिर भी,संजीव उसकी खुलकर समर्थन करता था। इसका मतलब यह नहीं था कि वह उसे डांटता नहीं था, वह उसे खूब खरी-खोटी सुनाता था, लेकिन उसके कानों में कभी भी जूं नहीं रेंगता था।

आर्थिक तंगी की वजह से बागुल के बड़े बेटे और उसकी बीबी के बीच तालमेल नहीं बैठ सका। स्थिति इतनी खराब हो गई कि एक दिन उसकी बहू ने उसपर एवं पति, सास, देवर आदि पर दहेज लेने का केस पुलिस में कर दिया। पुलिस को पैसे खिलाकर बड़ी मुश्किल से बागुल और उसके परिवार वाले जेल से बाहर निकल सके। इस चक्कर में बागुल को बांद्रा, मुंबई स्थित चॉलके अपने कमरे को औने-पौने दाम में बेचना पड़ा। 30 लाख रुपए की प्रॉपर्टी को जल्दबाज़ी में उसने महज 18 लाख रुपए में बेचदिया। पुलिस की पिटाई की वजह से जेल में बड़ा बेटा मानसिक रूप से थोड़ा अस्थिर हो गया था। फिर भी,वह काम करने के लिए दिल्ली चला गया, लेकिन फिर कभी वापिस नहीं लौटा। पता नहीं, अब वह जिंदा भी है या मर गया? बागुल, बैंक के क्रेडिट सोसाइटी से भी 3 लाख रुपए का लोन लिए हुए था। वह अपने कई मित्रों के लोन में गारंटर भी था। उसके दो मित्रों ने क्रेडिट सोसाइटी का कर्ज नहीं चुकाया तो सोसाइटी ने बागुल से कर्ज की राशि वसूल कर ली। वह यस बैंक और इंडसइंड बैंक से भी क्रमशः 3-3 लाख रुपए का कर्ज लिए हुए था। बागुल,ऑफिस में भी सहकर्मियों से लाखों रुपए का कर्ज ले रखा था।

रिटायरमेंट बेनिफिट्स से भी बागुल सभी का कर्ज चुकता नहीं कर पाया। इतना ही नहीं,रिटायरमेंट के बाद उसके पास रहने के लिए घर नहीं था। उसने बड़ी मिन्नत की तो संजीव ने उसे 6 महीने तक बैंक के फ्लैट में रहने की अनुमति दिलवा दी। बागुल को इस बात की चिंता भी खाये जा रही थी कि वह पेंशन के पैसे से घर कैसे चला पायेगा? उसका छोटा बेटा अभी भी बेरोजगार था और पत्नी हमेशा बीमार रहती थी, विगत 6 सालों में बागुल के बारे में संजीव जितना जान पाया था,वे यादें;उसके मन-मस्तिष्क में चल-चित्र की भांति चल रहे थे, इसी बीच बॉस ने उसे आवाज दी तो उसकी तंद्रा एकदम से भंग हो गई। बॉस ने पूछा, क्या वाकई में बागुल मर गया है। हाँ सर, वैसे,मैं उसके बेटे को कल फोन करूंगा, आज उससे बात करना मुनासिब नहीं होगा, संजीव ने कहा। अगले दिन बागुल के छोटे बेटे को संजीव ने फोन किया,वह फोन पर ही रोने लगा, रूआँसे स्वर में वह बोला, बाबा बहुत तनाव में थे, लगभग रोज लोग पैसे मांगने आते थे, गंदी-गंदी गालियां बाबा को देते थे। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने फिर कहा, कल शाम को कुछ लोगों ने बहुत जलील किया था बाबा को,उनकी बुरी तरह से पिटाई भी की थी,रात में भी वे रो रहे थे, रोते-रोते उनकी आँखें लग गई थी,सुबह 4 बजे आई को फीवर जैसा महसूस हुआ तो वह बाबा को उठाने की कोशिश की तो पता चला कि वे ऑफ हो गये हैं।

संजीव बागुल के बेटे की बातों को सुनकर मन ही सोच रहा था कि इंसान को न तो कभी दिखावा करना चाहिए और न ही कभी अपनी कमाई से ज्यादा खर्च करना चाहिए, क्योंकि उधार की ज़िंदगी को जीना आसान नहीं होता है.मौत ही इसकी अंतिम परिणति होती है।

लघुकथा

वैदेही कोठारी

नज़रिया

आज मीना और राधा ने शहर कॉलेज में एडमिशन लिया, दोनों बहुत खुश थी, दोनों बचपन से ही गांव में एक साथ ही पली बड़ी और पढ़ी थी, दोनों के सपने भी एक जैसे ही थे, कॉलेज में प्रोफेसर बनने के, दोनों पढ़ाई लिखाई में भी होशियार थी, वह दोनों ही मोबाइल से ज्यादा नाता नहीं रखती, जितनी जरूरत होती उतनी ही मोबाइल चलाती, जब वह शहर आई तो पहले उन्होंने कॉलेज कैंपस में हॉस्टल में रूम देखा किन्तु नहीं मिला, मीना बोली- अब क्या करें ?

राधा बोली- कॉलेज के आसपास कॉलोनी में देखते है,

मीना बोली- यही करना पड़ेगा ! वरना कैसे रहेंगे ?, कैसे पढ़ेंगे?, उन दोनों ने कॉलेज के पास कॉलोनी में कमरा देखना शुरू कर दिया । कई जगह देखा किन्तु कहीं पसंद नहीं आया तो कहीं बिलकुल मना कर दिया । मीना बोली - अरे यार! ऐसे कैसे चलेगा, अब अगर कोई

ऐसे कैसे चलेगा, अब अगर कोई मना करता है, तो पूछेंगे आखिर क्यों नहीं दे रहे हो, दूसरे दिन फिर वह रूम देखने गई, एक बड़ा सा घर दिखा, जिस पर एक छोटा सा बोर्ड लगा हुआ था, जिस पर लिखा था, 'मकान किराये से देना है', यह देख राधा मीना खुश हो गई, है भगवान!

मना करता है, तो पूछेंगे आखिर क्यों नहीं दे रहे हो, दूसरे दिन फिर वह रूम देखने गई, एक बड़ा सा घर दिखा, जिस पर एक छोटा सा बोर्ड लगा हुआ था, जिस पर लिखा था, मकान किराये से देना है, यह देख राधा मीना खुश हो गई, है भगवान! धन्यवाद तूने सुन ली, अब हम कॉलेज रेगुलर जा सकेंगे.., राधा ने गेट पर लगी डोर बेल बजाई, अंदर से आंटी ने दरवाजा खोला और उन दोनों को अंदर बुलाया, राधा मीना मुस्कुराते हुए नमस्ते बोली, फिर पूछा आंटी हमें किराये से कमरा चाहिए, बाहर बोर्ड लगा हुआ देखा, आंटी ने पहले पूछा- कौन कौन रहेगा रूम में, मीना बोली- हम दोनों ही.., आंटी बड़ी हिकारत वाली नज़रो से देखते हुए बोली, फिर तो नहीं मिलेगा! मीना ने पूछा - क्यों?

-हम गंदगी नहीं फैलाना चाहतें हमारे घर में!,

राधा बोली -आंटी हम रूम साफ रखेंगे, आंटी बोली- मेरा मतलब सफाई से नहीं,

मीना बोली- फिर ! लेस्बियन को हम रूम नहीं देते.,!

मीना और राधा एक दूसरे का मुंह देखने लगी...,

राधा बोली - आंटी हम.... वैसे नहीं..!, उसके पहले ही आंटी ने दरवाजा मुंह पर बंद कर दिया, दोनों उदास गई !

राधा बोली- यार.., आज यह मुहावरा याद आ गया,

मीना ने पूछा - कौनसा ?

एक मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है

राधा बोली -वो कैसे ?

कुछ लेस्बियन लड़कियों की वजह से, आज सभी लड़कियों को एक जैसा समझने लगे, बहन अच्छी दोस्त वाला नजरियां, तो जैसे समाप्त ही हो गया है।

किताब की बात

डॉ. प्रकाश उपाध्याय
समीक्षक

सम से विषम हुए- सख्त राहों पर शब्दों का बिंदास सफरनामा

मौजूदा दौर में हमें अनेक नवोदित कलमकारों की रचनाएँ - गीतों , ग़ज़लों और कविताओं की शक्ल में देखने को मिल रही हैं । युवा कलम की ये सृजन-बयार निश्चित ही हिंदी रचना जगत के लिये एक बेहद ताज़गीभरा शुभ संकेत है । इन तमाम उदीयमान रचनाकारों के बीच आशीष दशोत्तर जैसे विचारशील व सृजनात्मकता का व्यापक फलक ग्रहण करनेवाले युवा कवि व ग़ज़लकार न केवल अत्यंत प्रभावी ढंग से अनवरत लिख रहे हैं , बल्कि अपनी एक सर्वथा पृथक व विरल पहचान भी स्थापित कर चुके हैं ।

हालात की सम-विषम राहों के उतार-चढ़ावों के बीच अपने बिंदास सफर पर निकली ग़ज़ल का जीवंत सफरनामा है - सम से विषम हुए÷ ग़ज़ल संग्रह । युवा ग़ज़लकार आशीष दशोत्तर के इस सद्यः प्रकाशित संग्रह में कुल 120 ग़जलें हैं । आशीष की ये ग़जलें बकौल उनके - एक बेहतर दुनिया के ख्वाब को शब्दों में ढालने की कोशिश है÷ - इस कोशिश में वे किन सीमाओं तक पहुँचने में कामयाब रहे हैं - इस तथ्य की बानगी बेहतरीन व पुख्ता रूप से प्रस्तुत करती हैं - ये ग़जलें ।

समकालीन यथार्थ को गहराई से आत्मसात कर उसके आशय को रचनात्मक कैनवास पर रूपायित करना - आज के सृजन की अनिवार्यता बन चुका है । अपने इर्दगिर्द के परिवेश से उपजी चुनौतियाँ कलमकार को जहाँ एक ओर शिद्दत से यथास्थितिवाद के खिलाफ लड़ने की ताकत देती है , तो वहीं दूसरी ओर अंतर्मन की वेदना को जुबान देते हुए सृजन की सार्थकता की तलाश में भी मददगार बनती है ।

मौजूदा दौर में हमें अनेक नवोदित कलमकारों की रचनाएँ - गीतों , ग़ज़लों और कविताओं की शक्ल में देखने को मिल रही हैं । युवा कलम की ये सृजन-बयार निश्चित ही हिंदी रचना जगत के लिये एक बेहद ताज़गीभरा शुभ संकेत है । इन तमाम उदीयमान रचनाकारों के बीच आशीष दशोत्तर जैसे विचारशील व सृजनात्मकता का व्यापक फलक ग्रहण करनेवाले युवा कवि व ग़ज़लकार न केवल अत्यंत प्रभावी ढंग से अनवरत लिख रहे हैं , बल्कि अपनी एक सर्वथा पृथक व विरल पहचान भी स्थापित कर चुके हैं ।

आशीष के ताज़ा ग़ज़ल संग्रह - सम से विषम हुए÷ की ग़ज़लों पर विमर्शपरक दृष्टिपात् करने पर स्पष्ट होता है कि ये तमाम ग़जलें काफी सहजता लिये हैं । इनमें यथेष्ट संप्रेषणीयता है । इन ग़ज़लों में नानाविध अनुभूतियों के रंग लेकर रची गई खूबसूरत इंद्रधनुषी छवियाँ हैं । ये ग़जलें पाठकों को संवेदनाओं और प्रभावों के एक विरल अंतराल में ले जाती हैं - इतना ही नहीं , भीतर की दुखती रगों पर अंगुली रखती हुई , उस क्षोभ के लिये भी रास्ता बनाती है जो मौजूदा समय की नाना विसंगतियों और विरोधाभासों की उपज है ।

आशीष की ये ग़ज़लें बखूबी सम-विषम जीवन अनुभवों के वैविध्यपूर्ण परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं । प्रेम , स्नेह , हर्ष , विषाद , वेदना , अश्रु , उदासी , घुटन , संत्रास , रोष , विरोध व विक्षोभ जैसे अनेक मनोभावों को रूपायित करती हुई , उस उजास को भी आविष्कृत करती हैं , जो कठिन जीवन संघर्षों के बीच विकसित होते आशावाद से फूटता है । इन ग़ज़लों में - पेड़ , नदी , परिंदे , आसमाँ , तितली , जुगनू , फूल

, खुशबू, पतझर , बहार और बरसातें हैं , तो वहीं दूसरी ओर आग , आईने , पत्थर , जुल्म , हिंसा , नफरतें , बगावत और खुद्दारी के तेवर हैं साथ ही साथ अनेक अश्रुभीगी स्मृतियाँ हैं , महानगरीय जीवन का विद्रूप है , दिन ब दिन विघटित होते रिश्तों और परंपरागत मूल्यों की टूटनभरी कसक है , विस्मृत गाथाएँ हैं , निःशब्द पीड़ाएँ हैं , मौजूदा असंगत स्थितियों और विरोधाभासों के खिलाफ कसमसाता आक्रोश है तथा प्रतिकूल हालातों के अँधेरे को चीरती प्रबल जिजीविषा की चमकती लौ है - और हैं - इन सभी को रूपांकित करते विविध शब्द चित्र व ध्वनि बिम्ब ।

÷सम से विषम हुए÷ संग्रह की ग़ज़लों के अनेक परिदृश्य सोच के आयाम रचते हुए पाठकों का खासा ध्यान अपने तईं आकृष्ट करते हैं....

ये भी नक्शा तेरे घर का नायाब है
कच्ची बुनियाद है,ऊँची मेहराब है
बहते दरिया कहाँ से कहाँ तक गए
कैद अपनी अना में ही तालाब है
****

ग़म-खुशी,आँसू-हँसी,अपने पराए सब तो हैं
रंग बिखरे हैं हज़ारों ज़िंदगी के रंग में
दुश्मनी को भूल जाएँ दो घड़ी के वास्ते
क्यूँ न हम-तुम डूब जाएँ दोस्ती के रंग में
****

ग़ज़लों पे मेरी मुझको मिली दाद सुनेगा
पर कौन मेरे दर्द का अनुवाद सुनेगा ?
****

दुनिया की नज़र में है जो इंसान भला सा
सदियों से कतारों में खड़ा है वो ठगा सा
****

नफ़रतें,हत्या,बगावत,जुल्म,हिंसा देखकर
ज़िंदगी गुजरेगी आखिर और क्या क्या देख कर।
भीड़ भी है,उलझनें भी,ख्वाहिशें भी, चाह भी
आदमी हैरतजदा है खुद को तनहा देखकर
****

है कौन यहाँ जिसको अवसाद नहीं है
इक तू ही अकेला कोई अपवाद नहीं है
होलिका है दुनिया, कोई प्रहलाद नहीं है
होली का जो मकसद है, इसे याद नहीं है
****

जिंदगी जब भी मुस्कुराई है
जाने क्यों आँख डबडबाई है
ये जो विरसे की चारपाई है
मेरे हिस्से में यही आई है
****

तमगों से भला क्या मेरा ईमान बिकेगा
मुमकिन नहीं मेरे लिये लहजे को बदलना।
****

ये परिंदे, ये तितली,ये गुल औ धनक
इनको रँगता यहाँ कौन रंगरेज है ?
****

फूल,तितली,नर्म शाखें,अब कहाँ ठंडी हवा
हसरतों का एक जंगल, दूर तक फैला हुआ
****

छोटे दिये का कोई बड़प्पन भी देख ले
देकर सभी को रोशनी बेनूर हो गया।
****

खुशहाल जिंदगानी के हालात चाहिए
अम्नो अमा, सुकून के लम्हात चाहिए
आने को बेकरार है,फस्ले- बहार फिर
सूखी हुई ज़मीन को बरसात चाहिए।
****

कागजों पर जो नदी फैली हुई है दूर तक
उस नदी में अब सियासत नाव भी चलावाएगी।
****

दुनिया में अब न प्यार का रिश्ता तलाश कर
बेनूर आईने में न चेहरा तलाश कर।
****

ऐसी हो जाए आपकी दुनिया
जैसे खिलते गुलाब की दुनिया।
देखना खुद ही चल के आएगी
धूप के बाद छाँव की दुनिया।
****

कुल मिलाकर आशीष की ग़जलें अपने रचनागत कौशल तथा निरंतर परिपक्व होती विचार व भाव दृष्टि के बल पर नवीन संभावनाओं के आयाम तलाशती दिखाई देती हैं ।

निज अनुभूतियों के विविध रंग लेकर सुंदर ग़ज़लों के धनक रचने वाले युवा कलमकार आशीष इसी तरह निरंतर सृजनरत रहें..और...खूब बेहतर और सार्थक लिखते रहें -- सस्नेह अकूत मंगल कामनाएँ !!

ग़ज़ल संग्रह

सम से विषम हुए
ग़ज़लकार- आशीष दशोत्तर
प्रकाशक- इंक पब्लिकेशन
मूल्य- 200/-

कमाल जानवरों के कॉपीराइट का

वक्रोक्ति

– डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट
लेखक व्यंग्यकार हैं।

गिरगिट है तो रंग बदलना स्वाभाविक प्रक्रिया है लेकिन नेता जी का इस तरह रंग बदलना गिरगिट को रास नहीं आ रहा है। गिरगिटों की भी अपनी युनियन है और इस तरह से टेक्नालॉजी का हस्तांतरण किए बगैर मुफ्त में अपनी टेक्नोलॉजी का दुरुपयोग होते देख गिरगिट यूनियन के कई सदस्यों ने आपत्ति ली है कि यह न केवल गैर कानूनी है वरन हमारी प्रजाति पर अनावश्यक अतिक्रमण है।

गिरगिटों की सभा हुई और इस बात का निंदा प्रस्ताव पारित किया गया कि मौलिकता पर किया गया आक्रमण सहन नहीं किया जा सकता है और एक प्रतिनिधि मंडल इस संदर्भ में नेताओं से मुलाकात कर अपना रोष जाहिर करेगा। पूरे जंगल में यह बात आग की तरह फैल गई और सारे जंगली जानवर भी सचेत हो गए। लोमड़ियों के दल को भी प्रेरणा मिल गई और उन्होंने भी नेताओं में अपने चालाकी, कांईयापन के गुणों को चुराने के लिए आपत्ति ली। लोमड़ियों का कहना है कि हम तो अपने पेट भरने के लिए ही इसका इस्तेमाल करते हैं और कुछ जानवरो को ही मूर्ख बनाते हैं लेकिन नेता तो पता नहीं कितने करोड़ लोगों के साथ उनकी तकनीकें प्रयोग में ला रहे हैं। इसी तरह कांव-कांव करते रायता फैलाते कौवे, गीदड भभकी देने वाले गीदड़, मौके की तलाष करते लकड़बग्घे, भगत बने बगुले, बेसुरे राग अलापते गधे, आस्तीन में बैठे हुए सांप, घर के न घाट के कुत्ते भी इकट्ठा हुए और गिरगिटों के साथ हो लिए कि उनकी भी मौलिक टेक्नालॉजी का हस्तांतरण हो चुका है और उन्हें कानों कान खबर तक नहीं होने दी गई। पूरे जंगल में इस नाजायज अतिक्रमण का कोहराम मच गया था और गिरगिट इनका विसील ब्लोअर था।

जंगल के राज शेर को सभी ने ज्ञापन दिया तो शेर को बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनकी प्रजाति की साहसी और राजा बनने की टेक्नालॉजी को किसी ने नहीं चुराई। इतने में हाथी भी आ गए कि उनकी शांत, ईमानदार, नेक वृत्ति की टेक्नालॉजी को भी किसी ने नहीं चुराया। इस पर कुत्ते बोले कि वैसे तो वफादार रहने की टेक्नालॉजी हमारी भी चोरी नहीं हुई लेकिन बाकी ले ली गई। खूब शोरगुल हुआ और शेर ने सभी का ज्ञापन लेकर आश्वस्त किया कि वे जरूर इस संबंध में नेताओं से बातचीत करेंगे। जंगल के राजा शेर और अन्य जानवरों का एक प्रतिनिधि मंडल त्वरित सेवा में नेताओं से जाकर मिले और अपनी टेक्नालॉजी अतिक्रमण की बातों से अवगत करवाया। नेताओं ने तुरंत रंग बदल लिया और जानवरों के इस ज्ञापन को सभी ने आपत्तिजनक माना। इस संबंध में नेताओं ने अपनी बात रखते हुए कहा कि हमने कोई टेक्नालॉजी नहीं चुराई है, हम तो जनता की सेवा के लिए हैं और उनकी सेवा में सतत लगे रहते हैं। गिरगिट ने तुरंत उठकर कहा कि फिर आप रंग बदल रहे हैं। आप कुछ सालों पहले ही परचून की दुकान पर बैठते थे और आज आप लगभग आधे शहर के मालिक हैं, यह जादू कैसे हो गया। इस पर नेताजी बोले कि सभी का हक है आगे बढ़ना और हम भी आगे बढ़े। इतने में सांप बोल पड़ा कि आपके बगल में बैठे हुए नेताजी तो दस पार्टियों में रह चुके हैं और हर बार मंत्री बने हैं फिर हमें ही क्यों आस्तिन

के सांप कहा जाता है, इन्हें भी दूसरी पार्टी वाले यही कहते हैं। सांप की आपत्ति पर नेताजी को सांप सूघ गया और इधर-उधर बगलें झांकने लगे।

मच रहे शोर में बगुले बोलने लगे कि हम भी फालतू में बदनाम हैं इन नेताओं के चक्कर में। जब भी चुनाव आते हैं इन्हें मंदिर, मस्जिद याद आते हैं और वैसा ही राग आलापने लगते हैं। जनेउ धारण करेंगे, गंगा नहाएंगे, रोजे इफ्तार में जाएंगे सजदा करेंगे और चुनाव के बाद सब गायब। अपने वक्तव्य ही बदल देंगे। कुत्ते भी बीच में बोल पड़े कि हमारी वफादारी की अच्छी बात छोड़कर सारी बात अपना ली नेताओं ने। नेताओं ने तुरंत आपत्ति ली कि हम कुत्ते जैसे नहीं हैं। इस पर कुत्तों का प्रतिनिधि बोला आप में से कई ऐसे है जिन्होंने कभी भी वफादारी तो निभाई नहीं और फिर न घर के रहे न घाट के, यकीन न हो तो देख लीजिए अपने-अपने गिरेबान। एक पल को तो सभी नेता अपने-अपने गिरेबान सही में देखने लगे। लोमड़ी भी पीछे रहने वाली नहीं थी उसने भी जोर से हुंकार लगाई और कहा कि वादे करना और न निभा पाने के कांईयापन पर भी हम बदनाम होते हैं। चुनाव के समय गली-गली जाकर हाथ-पैर जोड़ते हैं, खूब वादे करते हैं और फिर पॉच साल गायब। वे बोलीं कि इतना काईयांपन तो हमारे अंदर भी नहीं है। गधे को भी ताव आना स्वाभाविक था। वो कहने लगा कि आप लोग में बहुत सारे गधे हैं, क्या, कब, कहाँ बोलना है जानते नहीं है और लोग हमारा नाम लेकर हमें बदनाम करते हैं। हमारे बच्चे भी हमसे पूछते हैं कि पापा हम क्या गधे के बच्चे हैं। वास्तव में परिवार वाद के चलते आपके बच्चे ऐसे काम करते हैं कि बस पूछो मत और हमारे बच्चे इससे शर्मसार हैं।

गीदड़ लंबे समय से चुप था तो वह भी बोल पड़ा कि आप लोग चुने हुए हो उस जनता है और कैसे-कैसे लड़ते हो, भभकी देते हो कि पूरा सभागृह कुर्सियां तोड़ने और कागज फाड़ने में लगा रहता है और हमे बेकार में परेशान होना पड़ता है। जंगल के छोटे-मोटे जानवर भी हमें इसी को लेकर चिढ़ाते हैं। नेताओं के नेता ने जानवरों के प्रतिनिधि मंडल को जैसे-तैसे चुप कराया और कहा कि ठीक है हम आपकी भावनाओं को समझते हैं और जिन गुणों पर आपका कॉपीराइट है उसका कानून बनाने का उपक्रम करते हैं और जिसे भी चाहिये उसे आप लोगों से कॉपीराईट खरीदना होंगे। इस पर जानवर सभी राजी हो गए और नेता भी। अगले एक साल में पूरा जंगल मालामाल था क्योंकि उनके विशिष्ट गुणों की खूब बिक्री हो रही थी। जानवर भी खुश और नेता भी। कमाल कॉपीराइट का था।

राजनीतिवालों को समझदारी दे... या मौला!

● यूके से प्रज्ञा मिश्रा

दरअसल, कई रिफ्यूजी पानी के रास्ते इंग्लैंड में दाखिल होते हैं और सरकार को लगता है कि इन छोटी नावों में सवार लोगों को किनारे उतरने से रोक देगी तो दुनिया की रिफ्यूजी की समस्या हल हो जाएगी। कई बार कहा जा चुका है कि कोई अपना घर जान बचाने के लिए छोड़ता है और महफूज जगह के लिए जान दावं पर लगा देता है तो उसे सहारा देने की जरूरत है।

प्रधानमंत्री ऋषि सुनक और होम सेक्रेटरी सुवेला ब्रेवरमैन ने जब नई सनक पेश की तो उनके डायस पर बड़े-बड़े शब्दों में लिखा था 'स्टॉप द बोट्स' और यह अंदाज कोविड-युग का ही था 'स्टॉप द वायरस' वाला।

इस पॉलिसी और इसकी भाषा से परेशानी है, साफ-साफ कहा गया कि अगर कोई रिफ्यूजी बिना किसी लीगल तरीके के यूके में दाखिल होने की कोशिश करेगा तो या तो उसे उसके देश भेज दिया जाएगा या फिर उसे किसी

तीसरे देश जैसे रवांडा भेजा जा सकता है।

दरअसल, कई रिफ्यूजी पानी के रास्ते इंग्लैंड में दाखिल होते हैं और सरकार को लगता है कि इन छोटी नावों में सवार लोगों को किनारे उतरने से रोक देगी तो दुनिया की रिफ्यूजी की समस्या हल हो जाएगी। कई बार कहा जा चुका है कि कोई अपना घर जान बचाने के लिए छोड़ता है और महफूज जगह के लिए जान दावं पर लगा देता है तो उसे सहारा देने की जरूरत है। जब संसद में इस मुद्दे पर बहस हुई तो लेबर पार्टी ने इस नियम का विरोध किया, लेकिन सरकार ने इस बात को इस तरह से तोड़-मोड़ कर पेश किया, जैसे लेबर पार्टी यूके की बॉर्डर खोल देना चाहती है, ताकि कोई भी बिना रोकटोक आ सके। बहस का हासिल था पूर्व प्रधानमंत्री टेरेसा मे की बातें।

टेरेसा सरकार में मौजूद टोरी पार्टी की ही तरफ से प्रधानमंत्री बनी थीं और जब वो खुद होम सेक्रेटरी थीं, तब भी उनकी सख्त नीतियों से दुनिया हैरान थी, लेकिन इस दिन अपनी ही पार्टी के खिलाफ हो गईं। उन्हें कहना पड़ा कि यूके के किनारों पर बोट रोकने से रिफ्यूजी समस्या खत्म नहीं होगी, बल्कि तस्करों को और बहाने मिल जाएंगे इन जरूरतमंदों से पैसा ऐंठने के।

टेरेसा मे ने याद दिलाया कि अगर कोई महिला इरान से जान बचा कर यूके की सीमा तक पहुंची है तो क्या उसे भी वापस इरान या रवांडा भेजा जाएगा, क्योंकि जो भी जान बचा कर भाग रहा है, वो कागजात और वीसा के इंतजार में अपने देश में नहीं रुक सकता है और यह बड़े और ताकतवर देशों को समझने की जरूरत है। मौजूदा सरकार की इस नीति ने दिखाया है कि सत्ता के असर में गलत फैसले किस तरह लिए जा सकते हैं। भली बात है कि इस पॉलिसी के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले संसद के अंदर भी हैं। रही बात ऋषि सुनक की तो शुरुआत में जो उनसे उम्मीद लगाए बैठे थे, अब उन्हें भी एहसास हो चला है कि यह इंसान है तो आखिर बोरिस जॉनसन का ही साथी, जो जॉनसन वाली राजनीति करने से बाज नहीं आएगा। बोरिस जॉनसन ही थे, जिन्होंने संसद इसलिए भंग कर दी, क्योंकि लोग उनकी बात के हक में नहीं थे। बोरिस का ही कमाल था कि पूरा देश सख्त लॉकडाउन से दो-चार हो रहा था और उनके बगीचे और ऑफिस में पार्टी चल रही थी। कहा जा सकता है कि मैग्ना कार्टा का जन्मदाता देश बहुत घटिया राजनीति से गुजर रहा है। जब सबसे नीचे पहुंच जाएं तो उसके बाद फिर ऊपर का ही रास्ता बचता है। बस इस देश के लिए यही दुआ है कि इन सत्ताधारियों को कुछ इंसानियत मिले!

डागदर बाबू : धर्मेन्द्र-जया की अधूरी प्रेम कहानी

सुपरहिट

– वीरेंद्र बहादुर सिंह
लेखक व्यंग्यकार हैं।

हम यहां आप की देखी गई यादगार फिल्मों की आगे-पीछे की कहानी को याद कराते हैं, पर आज एक ऐसी फिल्म की बात कर रहे हैं, जिसे किसी ने देखा नहीं। मतलब कि ऐसी फिल्म की बात, जो आलमोस्ट 80 प्रतिशत पूरी हो गई थी, पर उसकी रील ऐसी टूटी कि फिर चरखी पर चढ़ नहीं सकी। अगर फिल्म पूरी हो कर दर्शकों के सामने आई होती तो सच में वह यादगार और सुपरहिट साबित हुई होती।

इतना विश्वास से ऐसा कैसे कहा जा सकता है? क्योंकि इस फिल्म का आधार एक ऐसा कालजयी हिंदी उपन्यास था, जिसके उल्लेख के बगैर हिंदी साहित्य की बात अधूरी रह जाती है। उसका नाम है 'मैला आंचल' और उसके लेखक हैं फणीश्वरनाथ रेणु। इसी उपन्यास पर बनने वाली फिल्म का नाम था 'डागदर बाबू' (डाक्टर बाबू)। कलाकार थे, धर्मेन्द्र, जया बच्चन, उर्मिला भट्ट, उत्पलदत्त और अमजद खान। निर्देशक थे नबेन्दु घोष और निर्माता थे एस.एच. मुंशी, संगीतकार थे आर.डी.बर्मन। इसके 12 गाने रिकार्ड हो चुके थे।

अनिल कपूर के पिता सुरिन्दर कपूर ने 1981 में राकेश पांडे, राधा सलूजा, गुलशन अरोरा और अभी भट्टाचार्य को लेकर 'मैला आंचल' नाम की एक फिल्म बनाई थी। परंतु रेणु से उसका संबंध मात्र टाइटल तक ही था अथवा यह भी कह सकते हैं कि उन्होंने टाइटल चुरा लिया था। 'मैला आंचल' नायिका प्रधान फिल्म थी। उसमें एक अनाथ, पर प्रेग्नेंट लड़की की आपबीती कहानी थी। 'डागदर बाबू' अथवा मूल उपन्यास 'मैला आंचल' में एक ऐसे डाक्टर की कहानी थी, जो बिहार के एक एकदम पिछड़े गांव को अपना कार्यक्षेत्र बनाता है। इसमें यह बताया गया है कि वहां उसे किस तरह गरीबी, कुप्रथाओं, अज्ञानता और बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

'मैला आंचल' को हिंदी साहित्य का पहला आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। आंचल यानी साड़ी का पल्लू अथवा किनारा। इसमें 'इक' प्रत्यय लगाने से आंचलिक बनता है, जिसका अर्थ होता है आंचल संबंधी। हिंदी में आंचल का अर्थ जनपद अथवा क्षेत्रीय अथवा प्रांतीय होता है। किनारे के इलाके को आंचलिक कहा जाता है।

बिहार के मेरीगंज गांव की यह कहानी थी। जो अभी भी पिछड़ा है और जब तक गरीबी और अज्ञानता समाप्त नहीं होगी, पिछड़ा ही रहेगा।

इसमें तीन मुख्य पात्र थे, कमली- जो एक अज्ञात बीमारी से पीड़ित है। डा. प्रशांत- जो डाक्टर बन कर गांव में सेवा करने आते हैं और विश्वनाथ मलिक- जो कमली के पिता और गांव के जमींदार हैं।

2020 में अमिताभ बच्चन ने स्वामी विवेकानंद के वेश में पत्नी जया का एक फोटो इंस्टग्राम पर शेयर किया था। वह स्टिल फोटो इस अधूरी फिल्म 'डागदर बाबू' का था। जबकि बच्चन ने गलती से इसे बंगाली फिल्म बताया था। फिल्म में कमली बनी जया डा. प्रशांत के प्रेम में पड़ जाती है, इसलिए वह बीमारी का नाटक करती है और डाक्टर को बुलाती है। डाक्टर आदर्शवादी है और स्वामी विवेकानंद को बहुत मानता है। डाक्टर को प्रभावित करने के लिए कमली स्वामी विवेकानंद का वेश धारण करती है। डाक्टर जब उसे देख कर चकित हो जाता है, तब वह सिर का साफा उतार कर असली रूप दिखाती है।

%मैला आंचल% को हिंदी साहित्य का पहला आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। आंचल यानी साड़ी का पल्लू अथवा किनारा। इसमें %इक% प्रत्यय लगाने से आंचलिक बनता है, जिसका अर्थ होता है आंचल संबंधी। हिंदी में आंचल का अर्थ जनपद अथवा क्षेत्रीय अथवा प्रांतीय होता है।

'मैला आंचल' के लिए पद्मश्री सम्मान पाने वाले फणीश्वरनाथ रेणु (1921-1977) नेपाल की सीमा पर बसे बिहार के फारबिसगंज के रहने वाले थे। हिंदी विवेचक 'मैला आंचल' को प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान'के समकक्ष मानते हैं। 1954 में उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास 'मारे गए गुलफाम' पर बासु भट्टाचार्य ने 1966 में राज कपूर और वहीदा रहमान को लेकर मशहूर फिल्म 'तीसरी कसम' बनाई थी। इसका स्क्रीन प्ले नबेन्दु घोष ने लिखा था।

'तीसरी कसम' की सफलता से प्रेरित होकर नबेन्दु घोष ने बतौर निर्देशक 'मैला आंचल' को लेकर 'डागदर बाबू' बनाने का निश्चय किया था। नबेन्दु घोष एक प्रमुख बंगाली लेखक थे। उन्होंने 'तीसरी कसम' के अलावा 'सुजाता', 'बंदिनी', 'देवदास', 'मंझली दीदी' और 'अभिमान' फिल्मों का स्क्रीन प्ले लिखा था। 60 के दशक में उन्होंने अशोक कुमार और इंद्राणी मुखर्जी को लेकर 'प्रेम-एक कविता' नाम की एक फिल्म बनाने का प्रयास किया था। गुरुदत्त की 'कागज के फूल' की कहानी की क्रेडिट को लेकर दत्त से उनका झगड़ा होने के बाद वह उनकी पत्नी गीता दत्त को लेकर एक फिल्म बनाना चाहते थे।

नबेन्दु घोष की कहानी पर विमल राय ने 1954 में 'बाप-बेटी' (नलिनी जयवंत, बाल कलाकार आशा पारेख और नासिर हुसेन) फिल्म बनाई थी। इस फिल्म के निर्माता एस.एच.मुंशी बिहार के गया के थे। उनकी बहुत इच्छा थी कि रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' पर हिंदी में फिल्म बननी चाहिए और उसका निर्देशन नबेन्दु को करना चाहिए।

70 के दपक के मध्य में फिल्म की शूटिंग शुरू हुई थी और लगभग 80 प्रतिशत फिल्म बनने के बाद निर्माता मुंशी और फिल्म विक्रेता-फाइनेंसर मनिया दागा (यह भी बिहार के थे) के बीच झगड़ा हुआ और काम रुक गया। रेणु के बेटे दक्षिणेश्वर प्रसाद राय के कहे अनुसार, फिल्मी पत्रिका 'मायापुरी' में 'डागदर बाबू' का विज्ञापन भी हो गया था। फिल्म की 13 रीलें बन चुकी थीं।

नबेन्दु के बेटे शुभंकर घोष इस फिल्म में सहायक भी थे। उनके कहे अनुसार, उसी झगड़े के दौरान मुंशी की मौत हो गई थी। फिल्म की निगेटिव्स बॉम्बे लैब में रखी गई थी।

80 के दशक में मुंबई में आई बाढ़ में वह खराब हो गई थी। इसके बाद उसका क्या हुआ, किसी को पता नहीं।

हिंदी लेखक-पत्रकार अरविंद दास इस फिल्म के बारे में पर्याप्त जानकारी देते हैं। उनका कहना था कि फिल्म के कलाकार मशहूर थे। रेणु के गांव फारबिसगंज में जब फिल्म की शूटिंग चल रही थी, तब धर्मेन्द्र और जया को देखने के लिए लोगों की भीड़ लग गई थी। आर.डी. बर्मन ने इसमें असाधारण संगीत दिया था, जो मुंशी परिवार के पास संभाल कर रखा होना चाहिए।

शुभंकर का कहना है कि उनके पिता नबेन्दु घोष और रेणु अच्छे दोस्त थे। वह हमेशा अपने पास 'मैला आंचल' की पाकेट बुक रखते थे। वह काफी सालों से उसके स्क्रीन प्ले पर काम पर रहे थे। रेणु मैथिली भाषा की फिल्मों के साथ कुछ समय तक जुड़े रहे थे, उसी से हिंदी फिल्मों के प्रति उनमें रुचि जागी थी। पर बालीवुड में साहित्यिक कृतियों के साथ जो छेड़छाड़ होती थी, उससे वह नाराज थे।

जैसे कि 'तीसरी कसम' का अंत बदलने के लिए उन पर काफी दबाव डाला गया था। पर वह राजी नहीं हुए थे। इसी तरह उन्हें 'डागदर बाबू' को भी लेकर शंका थी। हिंदी के जाने-माने लेखक राबिन शॉ पुष्प ने अपने संस्मरण में लिखा है कि रेणु ने उनसे कहा था कि शायद वह 'डागदर बाबू' फिल्म देखने नहीं जाएंगे। ऐसा क्यों? पूछने पर उन्होंने कहा था कि पहले वह फिल्म की समीक्षा पढ़ेंगे, देखने वालों के विचार जानेंगे, जब सब ठीक लगेगा, तब देखने जाएंगे। बाकी 'मैला आंचल' ने मुझे जो यश दिलाया है, सम्मान दिया है, साहित्य में स्थापित किया है, उस कृति का विकृत रूप देखने का मुझ में साहस नहीं है।

काश, यह फिल्म पूरी हो गई होती और काश रेणु ने उसे देखा होता। काश हम पंचम दा का संगीत सुन सके होते।

जय हो बहरूपिए बाबा की

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त
युवा व्यंग्यकार

अभी जो राजाबाबू हैं, वे बड़े ही निहायती और अच्छे किस्म के आदमी हैं। अंधभक्तों की नजर से देखें तो उनमें भगवान नजर आते हैं। बहुत बड़े पद पर हैं। भेष बदलने में नंबर वन हैं। पल में रोना और पल में हँसना उनके बाएँ हाथ का खेल है। खुद किसी को कोई चीज़ दें तो उसे समय की जरूरत कहेंगे और कोई दूसरा दे दे तो उसे रेवड़ी का टैग लगाकर धोबी पछाड़ का मज़ा चखायेंगे। हमारे यहाँ चुनाव के दिन चल रहे थे।

यह जानते हुए कि सभी चीज़ें महंगी होती जा रही हैं बावजूद इसके उसे सस्ता कहना, बड़े जिगरे का काम है। यह अंधभक्ति की पराकाष्ठा है। मैं इस पराकाष्ठा का मजा लेने का आदी हो गया हूँ। यह मजा बाहर से मुस्कुराने और भीतर से रोने का टू इन वन अहसास देता है। इसलिए जिनमें देशभक्ति नहीं है उन्हें यह मजा नहीं लेना चाहिए। जो महंगे को सस्ता नहीं कह सकते उनके लिए दो रास्ते हैं- देशद्रोही कहलायें या मर जाएँ। अंधभक्त होना एक महान वरदान है। अंधभक्त न हों तो देश कब का बर्बाद हो जाता। उनके होने से ही निर्बाध गति से साँस ले पा रहे हैं। सूर्य का पूर्व से उदित होना, शाम को पश्चिम में अस्त होना यह सब क्या है? क्या यह सत्तर साल पहले हो पा रहा था? नहीं। कभी नहीं। यह सब तो पिछले कुछ वर्षों से हो रहा है।

अभी जो राजाबाबू हैं, वे बड़े ही निहायती और अच्छे किस्म के आदमी हैं। अंधभक्तों की नजर से देखें तो उनमें भगवान नजर आते हैं। बहुत बड़े पद पर हैं। भेष बदलने में नंबर वन हैं। पल में रोना और पल में हँसना उनके बाएँ हाथ का खेल है। खुद किसी को कोई चीज़ दें तो उसे समय की जरूरत कहेंगे और कोई दूसरा दे दे तो उसे रेवड़ी का टैग लगाकर धोबी पछाड़ का मज़ा चखायेंगे। हमारे यहाँ चुनाव के दिन चल रहे थे। राजाबाबू अपनी आदत के अनुसार भेष बदलकर हमारे यहाँ पहुँच गए।

शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, सड़क आदि छोड़कर शेष सभी विषयों पर घंटों बात करने लगे। न जाने किसी अज्ञानी ने बीच में पूछ लिया कि हमारी जरूरतें कब पूरा होंगी तब उन्होंने भगवान का वास्ता देकर भजन-कीर्तन करने के लिए कहा। उस दिन जाकर पता चला कि वे भगवानों को अपनी जेब में लेकर घूमते हैं। जहाँ जिसकी जरूरत होती है वहाँ उसी भगवान को उतार देते हैं। मंदिर जाने पर पंडित, मस्जिद जाने पर मौलवी, गिरजाघर जाने पर पादरी और गुरुद्वारे जाने पर पगड़ी बांधे सबसे बड़े भक्त होने का कीर्तिमान स्थापित करते हैं।

लोग नौकरी मांगते तो उन्हें दो करोड़ का खाली कटोरा थमा देते। अन्न माँगते तो 370 थमा देते। भाईचारा माँगते तो धर्मों के बीच कबड्डी करवा देते। सुख-शांति मांगते तो तीन तलाक थमा देते। केवल मांगने की देरी होती कि वे कुछ न कुछ थमाने के लिए तत्पर रहते। वे नए जमाने के अवतार थे। गीता में पाप बढ़ने पर भगवान के प्रकट होने की बात कही गई है। अब सब कुछ उल्टा है। दो-तीन दलों के नेता साथ मिल जाएं तो ईडी, सीबीआई, आईटी देवता प्रकट हो जाते हैं। यही सब देखते हुए मैंने सुखी होने का उपाय ढूँढ निकाला है। मैंने अंधभक्त शिविर केंद्र में दाखिला ले लिया है। अब मुझे रात को दिन, गधे को घोड़ा, बेरोजगार को रोजगार और भूखे को सुखी कहने में कोई गुरेज नहीं है। देशभक्त जो बन चुका हूँ। बड़े गर्व के साथ देशभक्ति का प्रमाणपत्र गले में लटकाए निडर यहाँ-वहाँ घूम सकता हूँ। अब मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। जय हो राजाबाबू की। जय जय बहरूपिए बाबा की।

मनोवृति का प्रभाव व्यक्ति के आचार, विचार एवं व्यवहार में स्पष्ट दिखाई देता है । अच्छी मनोवृति वाले लोग हमेशा सकारात्मक सोच के साथ रहते है और 'सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय' के सिद्धांत को लेकर आगे बढ़ते हैं वहीं बुरी मनोवृति वाले लोग नकारात्मक होते है और दूसरों को परेशान करने में ही अपना सुख खोजते हैं ।

मनोवृति को सकारात्मक रखें....

चिंतन

देवेंद्रसिंह सिसौदिया
युवा व्यंग्यकार

मनोवृति का व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव होता है । मनोवृति ही व्यक्ति को अच्छे और बुरे काम के लिए प्रेरित करती है । मनोवृति का विकास जन्मजात न होकर धीरे ङ्क धीरे उम्र के साथ होता है । मनोवृति का सृजन व्यक्ति के संस्कृति, संस्कार,शिक्षा, ज्ञान, सम्मान व दंड और संगति से होता है । मनोवृति का प्रभाव व्यक्ति के आचार, विचार एवं व्यवहार में स्पष्ट दिखाई देता है । अच्छी मनोवृति वाले लोग हमेशा सकारात्मक सोच के साथ रहते है और 'सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय' के सिद्धांत को लेकर आगे बढ़ते हैं वहीं बुरी मनोवृति वाले लोग नकारात्मक होते है और दूसरों को परेशान करने में ही अपना सुख खोजते हैं । मनोवैज्ञानिक डॉ नोर्मन के अनुसार मनोवृति को स्वस्थ बनाने के लिए उत्साह, कृतज्ञता, शांति और स्थिर बुद्धि को आधार माना है । इनके माध्यम से अवसाद ग्रस्त व्यक्ति की मनोवृति में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है । दार्शनिक अरस्तु भी कहते है कि आश्चर्य की मनोवृति के कारण ही मनुष्य ने चिंतन करना आरम्भ किया । मनोवृति में बदलाव लाकर स्थितियों में परिवर्तन लाया जा सकता है । मनोवृति को उदारता, संवेदनशीलता और दया के भाव से भी बदला जा सकता है । हमेशा प्रयास करें कि हमारी मनोवृति दूसरों के प्रति सकारात्मक होने के साथ सहयोगात्मक हो । किसी के प्रति द्वेष और बदले का भाव न रखें और न ही पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर अपनी विचारधारा को बनाएं । ज्ञात रहे मनोवृति आपके व्यक्तित्व एवं छवि का निर्माण करती हैं इसलिए हमेशा अच्छा सोचो, अच्छा बोलो और अच्छा करो ।

नगर में यह कैसा अतिक्रमण हटाओ अभियान और यातायात पुलिस व्यवस्था..?

नर्मदापुरम । दो दिन पहले प्रशासनिक महकमे के साथ गुरुवार बाजार बंद के दौरान नगरपालिका अधिकारी ने पूरे अमले के साथ अतिक्रमण हटाओ मुहिम शुरू कर व्यवस्था के पक्ष में एक अच्छा संकेत दिया था पर

उसकी सार्थक पहल सामने नहीं आई.. गुरुवार को बाजार बंद के दिन अचानक सतरास्ता से नीचे बाजार की ओर अतिक्रमण हटाओ मुहिम शुरू किया जाने के पीछे आखिर नगरपालिका और प्रशासन का मकसद व्यवस्था बनाने की थी तो वह मुहिम रुक क्यों गई..? इस सवाल का जवाब मुख्य नगरपालिका अधिकारी से ले पाना संभव नहीं क्योंकि फोन वे उठाते नहीं आफिस में वे मिलते नहीं.. यहां यह बात भी समझ से परे है कि कलेक्टर के निर्देश पर ही जब सभी काम होने हैं तो फिर आला अधिकारियों की विभाग में जरुरत क्या..? क्यों नहीं वे अपनी जिम्मेदारी कलेक्टर साहब के निर्देश देने के पूर्व पूरी कर पाते.. खानापूर्ति कर हमेशा प्रशासन का समय और आम नागरिकों की ये असुविधा बड़ा देते.. फिर कलेक्टर साहब को भी चाहिए वे एक दफा नगरपालिका अधिकारी और यातायात पुलिस को लेकर नगर का अतिक्रमण हटवा कर व्यवस्था की जवाबदारी नपा और यातायात अधिकारी को सौंप कर उन्हें व्यवस्था के लिए जवाबदेह बना दें और व्यवस्था बिगड़ने पर इन अधिकारियों को कटघरे में खड़ा कर कार्रवाई करें। नगरपालिका अधिकारी ने मानों कामचोरी का रास्ता अख्तियार कर रखा अपने कर्मचारियों को वे सरे आम कामचोर कहने से नहीं डरते, इसलिए भी नपा कर्मचारियों के साथ गाली गलौज और अभद्रता आए दिन इनके सामने तक की जा रही, उधर यातायात विभाग स्टाफ की कमी बताकर नगरीय व्यवस्था बनाने से मुंह चुराता है और हाईवे पर चेकिंग अभियान चलाता है। आखिर कब तक कलेक्टर साहब इस ओर ध्यान देंगे..? आखिर नगर व्यवस्था की जवाबदारी नगरपालिका और यातायात पुलिस की मुख्य हैं। सतरास्ता का अतिक्रमण दो दिन पहले हटाया गया और आज फिर वहां ठेला खड़ा हो गया नगरपालिका की टीम को उसने डपट कर भगा दिया। ऐसे कैसे काम चलेगा.. फिर सतरास्ता पर सीसीटीवी कैमरे लगाने का क्या औचित्य जब पुलिस यहां होने वाली गतिविधियों को कंट्रोल नहीं कर पाए। सतरास्ते पर सरकारी जमीन पर तीन घंटे में रातों रात ट्यूबवेल खुद गया और किसी जिम्मेदार को भनक तक नहीं कैसे.. जवाबदार अगर जिम्मेदारी से मुंह मोड़ लेंगे तो नगर व्यवस्थित कैसे रहेगा। फिर नगर की व्यवस्था के जिम्मेदारों के मुंह पर यह भी एक तमाचा है भगवान के सेवक को मंदिर व्यवस्था के लिए पार्किंग से परेशान होकर भगवान के नाम के ऊपर लिखने को विवश होना पड़ा कृपया यहां गाड़ी खड़ी नहीं करें...

भाजपा सांसद-कांग्रेस विधायक ने किया भूमिपूजन

बैतूल । जैसे-जैसे विधानसभा चुनाव पास आ रहे हैं वैसे-वैसे कांग्रेस और भाजपा में राजनैतिक खटास बढ़ती जा रही है और क्षेत्र के विकास कार्यों को लेकर श्रेय लेने की होड़ चल रही है। वैसे तो पहले भी ऐसा हुआ है लेकिन 157.42 करोड़ की 21 किमी. बायपास रोड को लेकर खींचतान तेज हो गई है।सबसे पहले बैतूल विधायक निलय डागा के कार्यालय से

जारी समाचार के अनुसार इस रोड के निर्माण को लेकर यह बताया गया कि विधायक डागा ने इस रोड की स्वीकृति और बजट के लिए 2 साल से प्रयास किए थे जो अब सफल हुए हैं। उसी दिन सांसद डीडी उइके सामने आए और उन्होंने भी मुख्यमंत्री के पत्र और अन्य दस्तावेजों के माध्यम से क्षेत्र को यह बताने का प्रयास किया कि यह उनका काम है। इस सडक् को लेकर 2017-18 के विधायकी कार्यकाल के दौरान तत्कालिन विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने भी प्रस्ताव बनवाया था। और हेमंत खण्डेलवाल के अनुसार इस प्रस्ताव को सांसद के माध्यम से आगे बढ़ाया था जिसमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बजट में राशि का प्रावधान किया था। विधायक निलय डागा का मानना है कि उनका प्रयास रंग लाया है। शहरवासियों को व्यस्ततम यातायात से निजात दिलाने के लिए उनकी कोशिश के अंतर्गत बैतूल बायपास सारनी, परासिया-छिंदवाड़ा मार्ग को स्वीकृति मिली है। इस संबंध में आम लोगों का कहना है कि कार्य किसी ने भी स्वीकृत कराए हो इसका लाभ क्षेत्र को मिलेगा और इसके लिए लोग सभी राजनैतिक दलों के जनप्रतिनिधियों का धन्यवाद कर रहे हैं।

सांसद-विधायक ने किया भूमिपूजन- सांसद डीडी उइके एवं विधायक निलय डागा ने आज 18 मार्च शनिवार को सुबह साढ़े 8 बजे ग्राम बडोरा में आयोजित एक कार्यक्रम में 21 किमी. बायपास रोड एवं 65 लाख की लाख की लागत से दनोरा-बडोरा के मार्ग के रिपेयरिंग कार्य का भूमिपूजन किया।इसके अलावा सोनाघाटी से मिलानपुर के 12.50 किमी. मार्ग के 521.56 लाख रुपए के डामरीकरण कार्य का भूमिपूजन किया। वहीं मलकापुर रोड भैंसदेही चौक पर सुबह 10 बजे बरसाली ग्राम के 99.78 लाख रुपए के एवं खण्डारा 13.98 लाख के नाली निर्माण के कार्य का भूमिपूजन किया। इस अवसर पर सांसद दुर्गा दास उइके, विधायक निलय डागा, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, नपा अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, बैतूलबाजार नपं अध्यक्ष दुर्गावती वर्मा, जिला पंचायत सदस्य जगन उइके, मंडल अध्यक्ष सुनील पवार, नीतू पटेल, ब्लाक कांग्रेस कमेटी ग्रामीण अध्यक्ष तरूण कालभोर, शहर कांग्रेस अध्यक्ष मोनू बडोनिया, जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष सुनील जेधे, करण प्रजापति, यूथ कांग्रेस अध्यक्ष मिथलेश राजपूत, प्रकाश माथनकर सहित बड़ी संख्या में भाजपा और कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दो निजी चिकित्सक बने निक्षय मित्र

बैतूल। जिले में जनप्रतिनिधियों, चिकित्सकों, समाजसेवियों एवं आमजन द्वारा निक्षय मित्र बनकर टी बी के रोगियों को उचित पोषण आहार दिलाने के लिए फ़ूड बास्केट का वितरण सतत किया जा रहा है। इसी क्रम में डॉ. मनीष लश्करे एवं डॉ. नमिता लश्करे ने निक्षय मित्र बनकर टीबी के पांच पॉजिटिव मरीजों को फूड बास्केट का वितरण शनिवार 18 मार्च 2023 को जिला क्षय केंद्र बैतूल में किया। जिले को वर्ष 2025 तक टीबी मुक्त बनाया जाना है, इसके लिए जिले के जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, अधिकारी, चिकित्सक एवं अन्य गणमान्य नागरिक निक्षय मित्र बन कर टीबी के मरीजों को फूड बास्केट का वितरण कर रहे हैं। उन्होंने अधिक से अधिक लोगों से निक्षय मित्र बन कर टी बी के मरीजों को उचित पोषण आहार प्रदान करने में सहयोग की स्वास्थ्य विभाग ने अपील की है। जिला क्षय अधिकारी डॉ. आनंद मालवीय ने बताया कि जिला चिकित्सालय में टीबी से बचाव के लिए सभी प्रकार की आवश्यक दवाइयां एवं उपचार पूरी तरह निशुल्क उपलब्ध है। पन्द्रह दिन से अधिक की खांसी, लगातार रहने वाला बुखार, शरीर में कमजोरी, वजन में अचानक कमी आदि टीबी के लक्षण है। टीबी की आशंका होने पर तत्काल नजदीकी शासकीय अस्पताल में जांच कराना चाहिए। समय पर टीबी की जांच होने से यह पूरी तरह ठीक हो जाती है।

शहर के विकास का इतिहास हमारे नाम - प्रवेश अग्रवाल - वार्ड क्रमांक 37 एवं 41 मैं निकली कांग्रेस की आज से हाथ जोड़ो यात्रा

देवास । शनिवार को शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनोज राजानी के नेतृत्व में वार्ड क्रमांक 37 एवं 41 में हाथ से हाथ जोड़ो यात्रा निकाली गई यात्रा भेरूगढ़ स्थित पवन पुत्र हनुमान जी की पूजा अर्चना के पश्चात प्रारंभ हुई जो बड़ा बाजार शालिनी रोड बढ़ई मोहल्ला विष्णु गली मुक्ताई मस्जिद रोड शमशान रोड होली मोहल्ला मालीपुरा चौराहा से खारी बावली अखाड़ा रोड पुरानी जेल के चौराहा प्र3 समापन हुई। जहां नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए शहर कांग्रेसी नेता प्रवेश अग्रवाल ने कहा की जहां तक देवास शहर के विकास की बात है शहर का इतिहास गवाह है कि कांग्रेस ने ही विकास किया है फिर बात शहर को औद्योगिक क्षेत्र बनाने की बड़ा चिकित्सालय बनाने की या शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की कांग्रेस ने देवास विकास प्राधिकरण के माध्यम से बड़ी-बड़ी कालोनियों का निर्माण किया है जिसमें आज लाखों लोग निवास कर रहे हैं उन्हें कम से कम किस्तों में और कम से कम लागत में भवन कांग्रेश के कार्यकाल में दिए गए हैं हम आपसे हाथ से हाथ जोड़ो अभियान के अंतर्गत मिलने आए हैं आपसे अनुरोध करने आए हैं कि इस बार प्रदेश में कांग्रेस की कमलनाथ की सरकार बनाएं और शहर के विकास को नए आयाम दे। यात्रा में चल रहे कांग्रेस नेताओं का जगह-जगह पुष्प माला पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर कांग्रेस नेता पंडित जयप्रकाश शास्त्री सुधीर शर्मा भगवान सिंह चावड़ा नजर शेख विक्रम पटेल संजय कहार कैलाश चावड़ा अजीत भल्ला इम्तियाज शेख भल्लू रमेश व्यास संतोष मोदी नीलेश कहार उमेश कहार प्रतिक शास्त्री सुभाष वर्मा शाहिद खान विकास बारोड़ सुनील शुक्ला इरफान कुरैशी चिंटू दारू अय्यूब भारती सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस जन उपस्थित थे ।

अपने दायित्वों का ठीक निर्वाहन कर रहे है नपा कर्मचारी : मजदूर संघ अध्यक्ष

नर्मदापुरम । नपा कर्मचारियों से की जा रही पार्षद पतियों द्वारा लगातार गाली गलौज और अभद्रता पूर्ण व्यवहार को भा.म.सं. से संबध्द न.पा.कर्म.मजदूर संघ ने गंभीरता से लिया है। इस मामले में संघ अध्यक्ष राजेश अत्रे ने स्पष्ट कहा हैं कि अपने दायित्वों का निर्वहन नपा कर्मचारी पूरी तरह निभा रहा है। इसलिए मार्च 2020 से नपा के मैदानी कर्मचारियों को लगातार छमता से अधिक जनहितार्थ वाले सभी सर्वे कार्य बीपीएल, आवास,

प्रधानमंत्री आवास योजना की अतिरिक्त भ्रष्टाचार वाली राशि वसूली, कोरोना में उपचार से संबंधित सभी कार्य, अमावश्या पूर्णिमा व्यवस्था काम करने के बाद सफाई और राजस्व वसूली में शासन स्तर पर पहले स्थान पर नर्मदापुरम नगरपालिका परिषद गौरवान्वित हुआ है जो सफाई विभाग, राजस्व विभाग, जल प्रदाय विभाग के कर्मचारियों के दायित्व निर्वाहन और छमता से अधिक कार्य करने के संभव हो सका है। श्री अत्रे ने कहा कि कार्यालय में विभागीय शाखाओं में कार्य के अनुरूप कितने कर्मचारी होना चाहिए और कितने कर्मचारी काम कर रहे हैं इसका ज्ञान नपाध्यक्ष और मुख्य नगरपालिका अधिकारी को नहीं है देखा जाए विगत वर्ष 2010 से सभी प्रकार के राशन कार्ड बनने का काम लगभग समाप्त है इसके बाद भी राशन कार्ड से संबंधित सभी कर्मचारियों को वर्ष 2010 से आजतक लगातार मासिक वेतनों का भुगतान किया जा रहा है वही दूसरी तरफ राजस्व विभाग का कर्मचारी दर दर भटक रहा है.. उसकी वसूली का ग्राफ राजस्व निरीक्षक के रिक्त पद व सहायक राजस्व निरीक्षक की कार्यशैली के कारण संदेह के घेरे में है। शासन स्तर राजस्व वसूली में प्रथम स्थान प्राप्त नगरपालिका में कुछ सहायक राजस्व निरीक्षक के मासिक वेतनों के भुगतान रोकना समस्याओं का समाधान नहीं है और जो कर्मचारी किसी कार्य को लेकर जब बार बार दंड का भागी बने तो उससे उसके पद के विपरीत काम लिये जाने का क्या औचित्य है। यह समझना होगा..? फिर मजदूर संघ ऐसे किसी कर्मचारी का समर्थन नहीं करता जो अपने कार्य को लेकर कर्तव्यनिष्ठ नहीं है। श्री अत्रे ने कहा कि नपाध्यक्ष व मुख्य नगरपालिका अधिकारी सुनिश्चित करें कि कार्यालय में किस शाखा में कितने कर्मचारियों की आवश्यकता है शासन से जनहितार्थ में मिलने वाले सभी सर्वे कार्य के लिए अलग से टीम का गठन किया जावे और शहर के बडे बकायादारो के नाम शहर के प्रमुख चौक चौराहों पर सूचीवार सार्वजनिक किये जाए। यह सुझाव मजदूर संघ कई बार दे चुका है लेकिन निलंबन, मासिक वेतनों का रोकना, वेतनवृद्धि रोकना, कर्मचारियों पर दंडात्मक कार्यवाहियां उचित नहीं कौन कर्मचारी किस कार्य में दक्ष है उसकी छमता को पहचाने और कार्य लेवे यही अपेक्षा मजदूर संघ करता है।

मुख्य नगरपालिका अधिकारी से चर्चा करने हेतु दिया पत्र...

नगरपालिका कार्यालय की आवक जावक शाखा में मजदूर संघ ने पत्र देकर मुख्य नगरपालिका अधिकारी से कर्मचारी हित की उचित मांगो के निराकरण हो इसे लेकर चर्चा के लिए समय मांगा है। क्योंकि जब औ मुख्य नगरपालिका अधिकारी नवनीत पांडे ने पद संभाला हैं तब से आज तक मुलाकात करने का संयोग नही बना। साथ ही नवीन पद सृजन, साप्ताहिक अवकाश, सातवें वेतनमान की अंतरराशि इत्यादि जैसे मुद्दे कर्मचारियों के हित आगे नहीं बढ़ पा रहे। संघ के कार्यकारी अध्यक्ष महेश वर्मा ने कहा कि संघ यहां अपेक्षा करता है कि यथाशीघ्र चर्चा के लिए मुख्य नगरपालिका के द्वारा संघ को चर्चा के लिए आमंत्रित किया जावेगा

लोकतंत्र सम्मान दिवस पर 20 मार्च को निकलेगा कांग्रेस का मार्च

देवास । मध्य प्रदेश के लोगों के द्वारा चुनी गई कांग्रेस की सरकार को भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गृह मंत्री अमित शाह के इशारे पर धनबल के सहारे गिरा दिया था विधायकों लेकर खरीद-फरोख्त के समाचार अखबार में प्रकाशित हुए थे । चुनी हुई सरकार के अल्पमत में आ जाने से 20 मार्च 2220 को प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे कमलनाथ जी ने लोकतंत्र का सम्मान करते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनोज राजानी व प्रवक्ता सुधीर शर्मा ने बताया कि 20 मार्च सोमवार को सुबह 10ः30 बजे जवाहर चौक स्थित कांग्रेस कार्यालय से लोकतंत्र बचाओ मार्च निकलेगा जो पुराना बस स्टैंड ,तीन बत्ती चौराहा, पीठा रोड होते हुए उज्जैन चौराहा स्थित बाबा साहब अंबेडकर की प्रतिमा पर पहुंचेगा ।

भगवान आदिनाथ का आज होगा 1008 कलशों से अभिषेक

इस महोत्सव में गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान तमिलनाडु, महाराष्ट, केरल प्रदेशों से 2 हजार से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए है।

धार। दिगंबर जैन मानतुंग गिरी तीर्थ पर 2 दिवसीय महा महामस्तकाभिषेक महोत्सव के 18 मार्च को याग मंडल विधान के पूजन से प्रारंभ हुआ। मीडिया प्रभारी सुभाष जैन ने बताया कि प्रातः से याग मंडल विधान मंत्र उच्चारण के साथ शुरू हुआ। पूजन आदि दोपहर तक चलती रही। इसके साथ ही 1100 वर्ष पुरानी भूगर्भ से प्राप्त हुई भगवान आदिनाथ की प्रतिमा का पूजन, प्रतिष्ठा, अभिषेक किया गया। याग मंडल विधान में 500 से अधिक जोड़ों ने पूजन में अपनी सहभागिता निभाई। इस महोत्सव में गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान तमिलनाडु, महाराष्ट, केरल प्रदेशों से 2

हजार से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए है।

आदिनाथ प्रतिमा का होगा अभिषेक - याग मंडल विधान का पूजन चंद्रमति माताजी के सानिध्य में पंडित सुधीर मार्तंड केसरिया जी ने कराया। आज 19 मार्च को पहाड़ी पर स्थित 21 फीट ऊंची भगवान आदिनाथ की प्रतिमा का 1008 कलशों से महा मस्तकाभिषेक होगा। महा मस्तकाभिषेक की प्रक्रिया दोपहर 11ः30 बजे से प्रारंभ होगी। यह महा मस्तकाभिषेक आदिनाथ भगवान का 12 वर्ष में एक बार होता है। इसके पूर्व याग मंडल विधान की पूर्णाहुति व हवन आदि संपन्न होंगे। मानतुंग गिरी प्रबंध कमेटी के अध्यक्ष नरेश गंगवाल, महोत्सव के प्रमुख संयोजक वीरेंद्र जैन, समाज अध्यक्ष अशोक कासलीवाल, उपाध्यक्ष विनय छाबड़ा, आशीष जैन इंजीनियर, कोषाध्यक्ष किशोर जैन तथा योगेंद्र जैन एवं मौसम झांझरी ने बताया कि महा मस्तक स्थल पर अभिषेक करने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। क्रमशः एक के बाद एक पारंपरिक धार्मिक वेशभूषा में जिन्होंने कलश ग्रहण किए हैं वे अभिषेक करेंगे। अभिषेक स्थल पर भीड़ एकत्रित ना हो इसलिए महिला पुरुष सेवकों को तैनात किया गया है।

औद्योगिक ईकाईयो से भी निगम द्वारा बकाया संपत्तिकर की राशि जमा कराई

देवास । व्यवसायिक क्षेत्रो,वार्ड क्षेत्रो के साथ ही औद्योगिक ईकाईयो पर बकाया संपत्तिकर की राशि की वसुली के लिए निगम की टीम द्वारा औद्योगिक ईकाईयो का सर्वे किया गया। जिसमे ऐसी ईकाईयां जिनके संपत्तिकर के खातो का सुधार होना था। जिसमे भण्डारी फाईल्स इण्डट्रीज पर राशि रूपये 3 लाख 80 हजार 776, देवास मेटल सेक्शन पर 2 लाख 10 हजार 218, विराज कन्डक्टर्स पर 50 हजार 977, अलका इंजिनियरिंग पर 23 हजार 697, इन ईकाईयो के खातो का सुधार कर संपत्तिकर की राशि जमा कराई गई साथ ही इफका लेबोरेट्रीज, संघवी फूडस, ईकानामिक पेकेजिंग इन्डस्ट्रीज इन तीनो ईकाईयो का संपत्तिकर बकाया है। तीनो ईकाईयो से निगम की टीम द्वारा संपत्तिकर जमा करवाये जाने हेतु सम्पर्क किया गया। इसी प्रकार व्यवसायिक क्षेत्रो व वार्ड क्षेत्रो के वार्ड क्रमांक 23 से 2 लाख, वार्ड 25 से 40 हजार वार्ड 27 से 25 हजार, वार्ड 40 से 10 हजार, वार्ड 39 से 22 हजार की राशि करदाताओ से निगम की टीम द्वारा सम्पर्क कर जमा कराई गई।

युवा साथियों शुभ संकल्प से लक्ष्य की सिद्धि निश्चित हैं : वीडी शर्मा भाजपा प्रदेशाध्यक्ष

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने युवा सम्मलेन को संबोधित किया

धार। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने बूथ विस्तार अभियान 2.0 के अंतर्गत भाजपा के युवा सम्मेलन का मृत्युंजय रिसोर्ट मनावर में आयोजन को संबोधित किया 7 अतिथियों ने बाबा बंकनाथ अटल दरबार में दर्शन किये 7 मंच पर पदार्पण पश्चात् भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा , प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल, इन्दौर संभाग सह प्रभारी राघवेंद्र गौतम,भाजपा जिला अध्यक्ष राजीव यादव,संगठन जिला प्रभारी श्याम बंसल,पूर्व मंत्री रंजना बघेल, जिला महामंत्री सन्नी रीन , सौरभ शर्मा , विधानसभा संयोजक राजू श्रीमाली, न पा अध्यक्ष अजय पाटीदार , विधानसभा विस्तारक नितीन पाठक आदि अतिथियों ने भारत माता व भाजपा पितृ पुरूषों के चित्र पर पूजन कर पुष्प अर्पित किये 7 मनावर विधानसभा के पांचो भाजपा मंडल अध्यक्ष सचिन पाण्डेय , अजय राठौड़, विक्रम निंगवाल, सचिन जायसवाल व दशरथ सोलंकी ने प्रदेश अध्यक्ष का पुष्पहार से स्वागत किया एवं युवा मोर्चा ने भी युवा आदर्श स्वामी विवेकानंद का चित्र अध्यक्ष शर्मा जी को भेंट किया 7 विधानसभा के सभी मंडल व मोर्चा पदाधिकारियों ने मंच पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों व पदाधिकारियों का पार्टी के दुपट्टो से क्रमानुसार

अभिनंदन किया 7 युवा सम्मेलन में स्वागत भाषण भाजयुमो जिलाध्यक्ष जय सूर्या ने दिया 7 भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव यादव ने कहा कि 14 मार्च से 24 मार्च 23 तक चल रहे दस दिवसीय अभियान में जिले के हर बूथ को डिजिटल करने के लक्ष्य को लेकर शत प्रतिशत पूर्ण करने के संकल्प को दोहराया 7 युवा सम्मेलन के मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने विधानसभा चुनाव के आगाज़ के रूप में युवाओं चलो बूथ की ओर का संदेश दिया 7 आपने सरकार के द्वारा जम्मू कश्मीर में धारा 370 हटाने जैसे ऐतिहासिक देशहित के निर्णयों की निरंतर पुनरावृत्ति की बात कही 7 आपने संगठन के बूथ डिजिटलाइजेशन कार्य में भाजपा नगर मंडल मनावर के अच्छे कार्य की मंच से प्रशंसा भी की 7 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने देश में सात टेक्सटाईल पार्को की घोषणा की , जिसमें से एक पार्क धार जिले को मिलेगा जिससे लाखो रोजगार के अवसर पैदा होंगे 7 सभी कार्यकर्ताओं ने अध्यक्ष के आह्वान पर अपने दोनो हाथ उठाकर घोषणा के लिए का प्रधानमंत्री का अभिवादन किया 7 प्रदेश अध्यक्ष ने भाजपा के तीस वर्षो से पोलिंग पर बैठकर चुनावों में निरन्तर अपनी सेवा देने वाले कार्यकर्ताओं का मंच पर सम्मान किया और कहा संकल्पित कार्यकर्ता ही पार्टी की रीढ़ हैं 7 आपने युवाओं को उद्बोधित करते हुए कहा शुभ संकल्प से राष्ट्रहित में किये सभी कार्य निश्चित सफलता को प्राप्त करते हैं 7 प्रदेश अध्यक्ष की उपस्थिति में सिंघाना मंडल से कांग्रेस से भाजपा में शामिल हुए 7 शक्ति जाट पटेल, चिंतन जाट उपसरपंच, महेंद्र देवके सरपंच, भगवंती रजनीकांत जाट जनपद सदस्य, राजा जाट पंच, जितेंद्र जाट, सर्वेश जाट , जगदीश मेहरा ,पंच राकेश बघेल , पंच रोहित बघेल, सुकलाल पांचाल , मंसाराम पाटीदार हेमंत कटारे एवं गोपाल मेहरा सभी सदस्य ग्राम पंचायत सात्तलाई (गांगली) के हैं 7 उपरोक्त कार्यक्रम का संचालन भाजपा नगर उपाध्यक्ष आकेश नवलखा ने किया 7 पूर्व मंत्री रंजना बघेल ने सम्मेलन में उपस्थित सभी उपस्थित सभी अतिथियों व कार्यकर्ताओं का आभार माना ।

प्रसिद्धि जमनी सरोवर तक बनेगी डिवाईडर सड़क

एसडीओ ने रेवाबनखेड़ी सड़क का करवाया सीमांकन

हीरालाल गोलानी सोहागपुर । सोहागपुर विधानसभा के ग्रामीणों एवं नर्मदा नदी जाने वाले श्रद्धालुओं को रेवाबनखेड़ी तक गड्ढों के रास्ते पर चलने वाले नागरिकों को शीघ्र ही चुनावी तोहफा मिलने वाला है। हालांकि इससे नागरिकों को कई सालों के उपरांत सड़क बनने के बाद हिचकोले खाते हुए नहीं जाना पड़ेगा। देखना यह होगा कि सालों तक परेशान नागरिक चुनावी लालीपाप के बाद आगामी विधानसभा चुनावों में अपनी तकलीफ याद रखती है।या लालीपाप खाकर रह जाती है ? लोक निर्माण विभाग अब जमनी तक डिवाईडर रोड करीबन 50 फुट चौडी एवं उसके बाद में खेरी तक 5.30 मीटर का रास्ता बनाया जा रहा है। इस संबंध में विभाग के सब इन्जीनियर आर .सी.शर्मा ने बताया कि इस रोड की लागत करीबन जी.एस.टी.काटकर 13 करोड़ है।सडक् सी.सी.सीमेंट से बनगी। उक्त निर्माण कार्य के लिए टेन्डर निकल गया है।ठेका जैन कंम्पनी को मिला है।इधर अनुविभागीय अधिकारी अखिल राठौर के नेतृत्व में रेवाबनखेड़ी मार्ग पर सड़क का सीमांकन किया गया। उल्लेखनीय है कि तत्कालीन कलेक्टर फैज अहमद किदवई ने करीबन 2005/6 वर्ष में पलकमती नदी के डूब के इलाके में बसे नागरिकों को 20/20 के प्लाट प्रदान किए थे। लेकिन नागरिकों ने अपनी सुविधानुसार मकानों को बन लिया। होना तो यह था कि उसी समय अधिक एरिया में मकान एवं शेड राजस्व विभाग को बनने नहीं देना था।अब सीमाकंन करके अतिक्रमण चिन्हित किया गया है। जिसमें टिन शेड के अलावा मकानों के अन्दर भी राजस्व नक्शे के अनुसार निशान लगाए हैं। इस संबंध में मुन्ना पटैल, रईस खॉन, शहीद खॉन आदि ने बताया कि हमें प्रशासन ने जगह दी थीं।हम लोग टीन शेड हटा लेगें। इधर राजस्व विभाग ने बताया कि वहां मकान निर्धारित जगह से अधिक जगह पर बनाए गए हैं।हमारे राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार अतिक्रमण है।एसडीएम में दो दिन का समय अतिक्रमण हटाने के लिए दिया गया है। सीमाकंन के अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी अखिल राठौर के अलावा लोक निर्माण के आर.एस.शर्मा, नायब तहसीलदार अंजू लोधी, नगरपालिका अधिकारी दीपक रानवे, आर.आई आर.एस.मरावी, राजस्व निरीक्षक संजय परसाई, पार्षद जमील खॉन आदि उपस्थित थे। संजय परसाई ने बताया कि रेवाबनखेड़ी मार्ग के अलावा रामगंज मोड़ पर जिजियाबाई के कई वर्षों से रोड के किनारे मकान बनाकर निवास करती थी ।उक्त महिला के अतिक्रमण को हटाया गया ।महिला का शंकर मंदिर के पीछे निजी मकान है ।अनुविभागीय अधिकारी ने उक्त मकान में बिजली, पानी व्यवस्था के लिए नगर परिषद बिजली विभाग एवं अन्य विभागों को तत्काल कराने के निर्देश दिए हैं।

रासेयो के सात दिवसीय आवासीय शिविर निरीक्षण भोपाल से पहुंचे अधिकारी

सुबह सवेरे सोहागपुर । बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल के एनएसएस प्रशिक्षक राहुल परिहार एवं जिला संगठन अधिकारी डीएस खत्री ने शुक्रवार को राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर का औचक निरीक्षण किया । इसके साथ छात्रों से गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। उल्लेखनीय है कि जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय सोहागपुर ने राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तहत गोद ग्राम गोड़ीखैरी में 13 मार्च से सात दिवसीय आवासीय शिविर आयोजित किया है। रासेयो के कार्यक्रम अधिकारी सैयद हामिद अली, कार्यक्रम अधिकारी बालिका वर्ग श्रीमती पूजा पटेल ने बताया आवासीय शिविर के दौरान विश्वविद्यालय से आए प्रशिक्षक राहुल परिहार ने छात्रों को एनएसएस संबंधी विभिन्न जानकारी दी। इस अवसर पर स्वयंसेवक दिव्या मौर्य, निकिता कुशवाहा ,पुष्पेंद्र राजपूत तथा राजकुमार से संवाद किया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉक्टर एन.के. नीखरा , डॉ विजय कुशवाहा, सैय्यद हामिद अली, पूजा पटेल, डॉक्टर

राजेश विश्वकर्मा आदि उपस्थित थे। इस आयोजन में विद्यार्थियों को प्रतिदिन व्यायाम कराना, सामाजिक गतिविधियों की जानकारी देना एवं सेवा कार्य से जोड़ने का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने स्वच्छता अभियान ,जागरूकता रैली एवं वृक्षारोपण आदि गतिविधियां सम्पन्न हुई।

मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे मां की पीड़ा और नार्वे का कानून!

बॉलीवुड एक्ट्रेस रानी मुखर्जी की नई फिल्म 'मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे' ने सिनेमाघरों में दस्तक दे दी। असिमा छिब्बर द्वारा निर्देशित यह फिल्म एक सच्ची घटना पर आधारित है, जो दर्शकों के दिलों-दिमाग को झझकोर देगी। 'मिसेज चटर्ज वर्सेस नॉर्वे' एक मां की जिंदगी पर आधारित कहानी है, जो अपने बच्चों की कस्टडी पाने के लिए सभी हदों को पार कर देती है। इस फिल्म में एक्ट्रेस रानी मुखर्जी के अलावा नीना गुप्ता, जिम सर्भ और अनिर्बान भट्टाचार्य ने भी मुख्य भूमिका निभाई है।

यह फिल्म 2022 में रिलीज हुई सागरिका चक्रवर्ती की आत्मकथा 'द जर्नी ऑफ ए मदर' पर बनाई गई। दर्शकों की दिलचस्पी इसमें है कि कैसे एक माँ की ममता के आगे किसी देश को अपना कानून बदलना पड़ता है। कैसे एक मां जरूरत पड़ने पर अपने बच्चों के लिए शेरनी बन जाती है। बिना अपने नुकसान की परवाह किए बिना किसी भी परिस्थिति से लड़ जाती है। सागरिका की कहानी दिलचस्प है। विदेश में जाकर नौकरी करना और वहां सुखी जीवन जीने की तमन्ना ज्यादातर भारतीयों की रहती है। यही वजह है कि कई मां-बाप विदेश में सेटल हो चुके या होने वाले लड़के से अपनी लड़की की शादी रचाते हैं। सागरिका के साथ भी कुछ ऐसा होता है। 2007 में उनकी शादी अनुरूप भट्टाचार्य से हुई। अनुरूप पेशे से भूभौतिकीविद् हैं। इस बीच नार्वे में उनकी जॉब लग गई और इस कपल ने वहां जाकर सेटल होने का फैसला किया।

कोलकाता के बाहरी क्षेत्र के रहने वाले अनुरुप और सागरिका नार्वे पहुंच जाते हैं। दोनों पहली बार विदेश गए थे। वे वहां के तौर-तरीकों और कानून से अनजान थे। 2008 के अंत तक सागरिका एक बच्चे अभिज्ञान की मां बन जाती है। लेकिन, बहुत जल्द उनको पता चल जाता है कि उनका बच्चा सामान्य नहीं है। उसमें ऑटिज्म के लक्षण दिखने शुरू हो गए थे। किसी भी मां-बाप के लिए ये किसी त्रासदी से कम नहीं होता कि उनका बच्चा इस तरह की लाइलाज बीमारी का शिकार हो जाए। दोनों बच्चे की देखभाल में लग गए। 2010 में सागरिका फिर गर्भवती होती है। इस बार उसने एक बच्ची ऐश्वर्या को जन्म दिया। दोनों बच्चों के उम्र में दो साल का अंतर था, इसलिए दोनों की एक साथ देखभाल करना उनके लिए चुनौती बन गई। इधर अभिज्ञान की बीमारी गंभीर होती गई। नाराज होने पर वो अक्सर अपना सिर जमीन पर पटकने लगता था।

साल 2011 की बात है, अनुरूप अपनी नौकरी में व्यस्त थे। सागरिका अपने बच्चों को पालने में मशगूल थी। इस बीच उनके साथ अनहोनी हो जाती है। इस बारे में उन्होंने नहीं सोचा था। नॉर्वेजियन चाइल्ड वेलफेयर सर्विसेज, जिसे बार्नेवरनेट (चाइल्ड प्रोटेक्शन) के रूप में जाना जाता है, ने ऐश्वर्या और अभिज्ञान दोनों को उनके माता-पिता से दूर कर दिया। दोनों बच्चों को अपनी कस्टडी में लेकर फोस्टर केयर में भेज दिया जाता है। इसके साथ ही ये भी कहा गया कि दोनों जब तक 18 साल के नहीं हो जाते, उन्होंने अभिभावक को नहीं सौंपा जा सकता।

इसके पीछे 'अनुचित पेरेंटिंग' वजह बताई जाती है। कहा गया कि महीनों तक ÷ऑब्जर्वेशन÷ करने के बाद ये फैसला लिया गया। इतना ही नहीं कपल के खिलाफ आरोपों में उनके बच्चों के साथ एक ही बिस्तर पर सोना, हाथ से खाना खिलाना (जिसे नॉर्वेजियन अधिकारियों ने जबरन खिलाना माना) और शारीरिक दंड भी शामिल था। सागरिका ने कथित तौर पर बच्चों को एक बार थप्पड़ मारा था। जबकि, ये चीजें भारतीय संदर्भ में 'सामान्य' लग सकती हैं, लेकिन नार्वे के अधिकारियों की नजर में कानून का उल्लंघन था।

इसके बाद मिसेज चटर्जी अपने बच्चों को वापस पाने के नॉर्वे की सरकार से लड़ने का फैसला लेती है। मिसेज चटर्जी की यह कहानी केवल नॉर्वे में अपने बच्चों को वापस पाना नहीं बल्कि भारत में जब सुचि और शुभ को उनके अंकल और दादा-दादी को हैंडओवर कर दिया जाता है, तब उसकी एक और भावनात्मक यात्रा शुरू होती है। फिल्म में रानी मुखर्जी ने मिसेज चटर्जी का किरदार बेहद ही शानदार तरीके से निभाया। इस फिल्म में रानी के किरदार ने हर सीन में इमोशन्स को महसूस करवाया है। फिल्म में अनिर्बान भट्टाचार्य ने रानी मुखर्जी के पति का किरदार निभाया है और फिल्म का उनका किरदार भी पसंद गया। फिल्म का नरेशन काफी स्मूद और स्क्रिप्ट बहुत ही क्रिस्प है। फिल्म में कुछ सीन ऐसे भी हैं, जो दिल को झकझोर कर रख देंगे। फिल्म में केवल मिसेज चटर्जी की लड़ाई को दिखाया गया है। हालांकि कहानी के कई पहलू अनसुलझे ही रह गए।

रियल बॉक्स

अब लगा कि हम भी 'ऑस्कर' के लायक

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

देश के फिल्म इतिहास में पिछले दिनों जो हुआ, वो आज तक नहीं हुआ। हमारे यहां बनी एक शॉर्ट फिल्म और एक फिल्म के गाने को ओरिजनल सांग कैटेगरी में ऑस्कर अवॉर्ड से नवाजा गया। इस तरह भारत ने दो ऑस्कर अवॉर्ड्स अपने नाम किए। दक्षिण की फिल्म 'आरआरआर' के गाने 'नाटू-नाटू' ने बेस्ट ओरिजिनल सॉन्ग कैटेगरी का अवॉर्ड जीता। दूसरा अवॉर्ड शॉर्ट फिल्म 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' को मिला, जिसने बेस्ट शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री कैटेगरी में बाजी मारी। भारतीय फिल्मों को ये सम्मान पहली बार मिले। इससे पहले भी 'गांधी' और 'स्लमडॉग मिलिनियर' के कंधे पर चढ़कर कई ऑस्कर भारत आए, पर वो विदेशी फ़िल्में थी। भारत के नाम पहला ऑस्कर अवॉर्ड 1983 में मिला था। यह अवॉर्ड उस साल रिलीज हुई फिल्म 'गांधी' के लिए हासिल हुआ था इस फिल्म में भानु अथैया ने जॉन मोलो के साथ कॉस्ट्यूम डिजाइन किए थे, जिसके लिए उन्हें यह अवॉर्ड मिला। ऑस्कर पाने के बाद भानु अथैया ने कहा था कि 'गांधी' फिल्म का दायरा इतना बड़ा था, कि उससे कोई मुकाबला करने के बारे में सोच ही नहीं सकता था। जबकि, इस बार देसी फिल्मों को इस सम्मान के लिए चुना गया। देखा जाए तो 'ऑस्कर 2023' में भारत की और से तीन फिल्मों ने दावेदारी पेश की थी। इनमें पहली थी आरआरआर, दूसरी द एलिफेंट व्हिस्परर्स और तीसरी ऑल दैट ब्रीथ्स थी। ऑल दैट ब्रीथ्स को सफलता हासिल नहीं हुई, जबकि 'आरआरआर' के ओरिजनल सांग और 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' ने अपना जलवा दिखाते हुए भारतीयों को जश्न मनाने का मौका दिया।

फिल्म 'आरआरआर' के गाने 'नाटू-नाटू' ने तो ऑस्कर 2023 में जैसे इतिहास रच दिया। एसएस राजामौली की इस फिल्म के इस गाने ने कड़े मुकाबले में अवॉर्ड अपने नाम किया। इसके साथ पूरे देश में जश्न का माहौल है। इस लिस्ट में शामिल 15 गानों को हराकर 'नाटू-नाटू' ने बाजी जीती। 'नाटू-नाटू' का मुकाबला टेल इट लाइक ए वूमेन के अपलॉज, टॉप गन- मैवरिक के होल्ड माई हैंड, ब्लैक पैंथर- वकांडा फॉरएवर के लिफ्ट माई अप और एवरीथिंग एवरी वेयर ऑल एट वंस के दिस इज ए लाइफ से था। इस कैटेगरी में नाटू-नाटू अव्वल रहा। ऑस्कर के लिए शॉर्टलिस्ट होने वाला यह भारत का पहला गाना भी है। पिछले साल अमेरिका में फिल्म की रिलीज के बाद 'आरआरआर' सॉन्ग 'नाटू-नाटू' ग्लोबल सेंसेशन बन गया। इस सांग को एमएम किरवानी ने कम्पोज किया और चंद्र बोस ने इसे लिखा है। फिल्म में इस गाने को जूनियर एनटीआर और रामचरण पर फिल्माया है। ये गाना हिंदी में 'नाचो नाचो, तमिल में 'नट्टू कूथु' और कन्नड़ में 'हल्ली नातु' के रूप में भी रिलीज किया गया। इससे पहले 'नाटू-नाटू' ने बेस्ट सांग के लिए क्रिटिक्स च्वाइस अवॉर्ड भी जीता था।

देशभर में छाए इस मस्ती भरे गाने को ऑस्कर मिलने के पीछे जिस व्यक्ति की सबसे बड़ी भूमिका है, वो है संगीतकार एमएम किरवानी। उन्होंने इस गाने को सुरों से भरने में जान फूंक दी। उनका पूरा नाम कोडुरी मारकथमणि किरवानी है और वे रिश्ते में 'आरआरआर' के डायरेक्टर एसएस राजामौली के चचेरे भाई हैं। उनकी पत्नी एमएम श्रीवल्ली पेशे से प्रोड्यूसर हैं। एक रिश्ता यह भी है कि वे अलावा राजामौली की पत्नी रमा की बड़ी बहन हैं। राजामौली और किरवानी परिवार का फ़िल्मी दुनिया से गहरा ताल्लुक है। सिर्फ वे ही नहीं उनके बच्चे भी संगीत की दुनिया में रंग जमा रहे हैं। इस लोकप्रिय गाने को काल भैरव और राहुल सिप्लिगुंज ने आवाज दी है। इनमें काल भैरव संगीतकार एमएम किरवानी के बड़े बेटे ही हैं।

'आरआरआर' उन्हें सबसे ज्यादा लोकप्रियता देने वाली फिल्म रही। किरवानी अब अजय देवगन और तब्बू की फिल्म 'औरों में कहाँ दम था' के गानों को भी संगीत देंगे। 1987 में बतौर असिस्टेंट म्यूजिक डायरेक्टर एमएम किरवानी ने अपने करियर की शुरुआत की थी। वे मेहनत से संगीत साधना में डूबे रहे। 1990 में फिल्म 'मौली' में उन्हें पहला ब्रेक मिला। इसके बाद रामगोपाल वर्मा की सुपरहिट फिल्म 'क्षण क्षणम' ने किरवानी को लोकप्रियता दी। वे साउथ की फिल्म इंडस्ट्री में म्यूजिक डायरेक्टर छा गए। साउथ की फिल्मों में कई गानों को उन्होंने संगीत देकर हिट बनाया। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में फिल्म 'क्रिमिनल' से अपना करियर शुरु किया, फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे फिल्म इंडस्ट्री में बेहतरीन संगीतकार के रूप में जाने जाते हैं। इसका प्रमाण है कि उन्हें अभी तक 8 बार फिल्मफेयर पुरस्कार मिल चुका है। उन्हें 11 बार आंध्र प्रदेश सरकार के 'राज्य नंदी पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। उन्हें 'बाहुबली- द बिगनिंग' के लिए भी सैटर्न पुरस्कार के लिए भी नॉमिनेट किया गया था। इसके अलावा भी उन्हें कई पुरस्कार मिले।

अब बात करते हैं उस छोटे हाथी की छोटी फिल्म की, जिसने दुनिया का सबसे बड़ा अवॉर्ड जीत लिया। शॉर्ट फिल्म 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' ने बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट फिल्म का पुरस्कार अपने काम किया। इस डॉक्यूमेंट्री का निर्देशन कार्तिकी गोंजाल्विस ने किया है। जबकि, गुनीत मोंगा इसकी निर्माता हैं। 39 मिनट की इस शॉर्ट फिल्म में इंसान और जानवरों के बीच की बॉन्डिंग को दिखाया गया। इस छोटी फिल्म की कहानी दक्षिण भारतीय कपल बोमन और बेली की है, जो रघु नाम के एक छोटे अनाथ हाथी की देखभाल करते हैं। इसे तमिल भाषा में बनाया गया। 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' के साथ हॉल आउट, द मार्था मिशेल इफेक्ट, स्ट्रेंजर एट द गेट, और 'हाउ डू यू मेज़र ए ईयर' भी नॉमिनेट थीं। लेकिन, 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' ने जीत हासिल की। खास बात यह कि इस श्रेणी में ऑस्कर जीतने वाली यह पहली भारतीय फिल्म है। 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' मुदुमलाई नेशनल पार्क के रघु नाम के एक अनाथ हाथी के बच्चे की कहानी है। इस डॉक्यूमेंट्री न केवल मनुष्य और जानवर के बीच बनने वाली बॉन्डिंग को दिखाया, बल्कि प्राकृतिक सुंदरता को भी बेहतरीन ढंग से फिल्माया है।

फिल्म की डायरेक्टर कार्तिकी ने पांच साल तक बोमन और बेली की जिंदगी को करीब से देखा। कार्तिकी ने बेबी हाथी रघु के साथ जो पल बिताए, वे सब फिल्माए गए। रघु के शॉट के लिए उसे कोकोनट मिक्सचर खिलाया जाता था। इसे खाकर वह खुशी से झूम उठता और फिर ये मोमेंट्स फिल्माए। इस तरह साढ़े चार सौ घंटे के फुटेज इकट्ठा हुए। ये शॉर्ट फिल्म तमिलनाडु के मुदुमलाई रिजर्व में फिल्माई गई है। इसमें लोकेशन की प्राकृतिक सुंदरता दिखाई गई। साथ ही प्रकृति के लिए आदिवासियों का समर्पण भी दिखाया गया। बताया गया है कि कैसे आदिवासी प्रकृति को सहेजे हुए हैं। ये फिल्म पर्यावरण संरक्षण की भारतीय संस्कृति और परंपरा को भी दिखाती है। फिल्म के शुरू में बेहतरीन प्राकृतिक दृश्य दिखाए गए हैं। बमन और हाथी रघु के बीच अलग तरह का लगाव बताया गया। बमन बताता है कि रघु उसे जंगल में घायल मिला था। जंगली कुत्तों ने उसकी पूंछ काट ली थी। वह बेहोशी की हालत में पड़ा था। रघु की मां की मौत बिजली के झटके लगने से हो गई थी। रघु को उसके झुंड से मिलाने की काफी कोशिश की गई। लेकिन, सभी कोशिशें नाकाम रही। बेली को हाथियों के बच्चों की देखभाल के लिए चुना गया था। वह एकमात्र महिला है, जो ऐसा कर रही थी। बेली और बमन रघु की देखभाल करते हैं। इस शॉर्ट फिल्म में मानव और हाथियों के बीच प्यार और लगाव को दिखाया गया है। बताया गया कि किस प्रकार अपने झुंड से बिछुड़े हाथियों की देखभाल की जाती है। इस शॉर्ट फिल्म और 'नाटू नाटू' गाने ने जो किया वो भारतीय फिल्म इतिहास में मील का पत्थर बन गया, अब यदि कोई फिल्म ऑस्कर जीतती भी है तो वो पहली तो नहीं होगी!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

9 शहरों की यात्रा पर निकल पड़ा 'भोला' का ट्रक

फिल्म प्रमोशन के लिए मेकर्स और स्टार्स नए-नए तरीके आजमाते नजर आते हैं। कोई टीवी और रियलिटी शो में जाकर प्रमोशन करता नजर आता है, तो कोई सीधे फैंस के बीच जाकर प्रचार करता है। इस बीच अभिनेता अजय देवगन ने बिल्कुल अनोखा तरीका अपनाया। ये एक्टर इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'भोला' को लेकर चर्चा में हैं। यह फिल्म 30 मार्च को सिनेमाघरों में दस्तक देगी और अजय देवगन पूरी ताकत से इस फिल्म के प्रमोशन में जुटे हैं। इसी के तहत उन्होंने भोला यात्रा शुरू की है।

फिल्म 'भोला' की रिलीज से पहले अजय देवगन ने 'भोला यात्रा' शुरू की है। 'भोला' का ट्रक ठाणे, सूरत, अहमदाबाद, उदयपुर, जयपुर, दिल्ली, गुरुग्राम, कानपुर और लखनऊ जाएगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक ट्रक को हर एक शहर में एक मशहूर जगह पर खड़ा किया जाएगा और शहरों के लोगों के लिए एक मस्ती भरी शाम का आयोजन भी किया जाएगा। अजय देवगन ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट साझा किया है। इसमें एक्टर मुंबई से 'भोला ट्रक' को रवाना करते नजर आ रहे हैं।

ट्रक पर फिल्म के पोस्टर लगे हैं। इसके साथ अजय देवगन ने कैप्शन लिखा है, 'भोला यात्रा की शुरुआत हो चुकी है। भोला के ट्रक को हर शहर में एक प्रसिद्ध जगह पर रखा जाएगा और शहरों के लोगों के लिए एक मस्ती भरी शाम का आयोजन भी किया जाएगा। भोला का ट्रेलर देखें, विशेष गतिविधियों में हिस्सा लें और जिससे आप भोला के प्रोडक्ट भी जीत सकते हैं। यात्रा जल्द ही आपके शहर पहुंचने वाली है!' साझा किए गए वीडियो में देखा जा सकता है कि अजय देवगन ब्लैक जींस और शॉर्ट कुर्ता पहने नजर आ रहे हैं। उनके कुर्ता पर 'ओम' लिखा हुआ है।

अजय देवगन की 'भोला' साउथ की हिट फिल्म 'कैथी' की हिंदी रीमेक है। इसमें अजय देवगन के अलावा तब्बू, गजराज राव, दीपक डोबरियाल जैसे सितारे नजर आएंगे। इस फिल्म में अजय देवगन लीड रोल निभा रहे हैं। इसके अलावा इस फिल्म का निर्देशन भी उन्होंने ही किया है। 'भोला' के बाद अजय देवगन फिल्म 'सिंघम अगेन' में नजर आएंगे। रोहित शेट्टी के निर्देशन में बनी इस फिल्म में दीपिका पादुकोण भी अहम रोल निभा रही हैं।

वैज्ञानिक पर बनेगी बायोपिक, 'नासा' को ठुकराया

केले पर शोध करने वाले बिहार के भागलपुर के एक वैज्ञानिक पर फिल्म बनाए जाने की तैयारी है। फिल्म का नाम होगा 'बनाना बॉय!' युवा वैज्ञानिक गोपाल जी केले के पल्प पर शोध कर रहे हैं। गोपाल ने 13 वर्ष की उम्र में केले के थंब से बिजली उत्पादन कर दुनिया को चौंका दिया था। अब वे केले के थंब से पल्प तैयार कर रहे हैं, जिससे प्लेट और थाली बनती है। इसके साथ ही वे सिंगल यूज प्लास्टिक पर अभी वो काम कर रहे हैं। गोपाल अभी ऐवोन पैफको नामक कंपनी में बतौर साइंटिस्ट कार्यरत है। गोपाल अब तक कई आविष्कार कर चुके हैं।

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उनके आविष्कार को न सिर्फ सराहा, बल्कि उनको 2017 में अहमदाबाद स्थित इनोवेटिव फाउंडेशन भेजा था। गोपाल को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा 40 युवा आईकॉन में भी शामिल किया गया था। 'नासा' के अंतर्गत काम करना हर वैज्ञानिक का सपना होता है, लेकिन गोपाल ने नासा से मिले ऑफर को ठुकरा दिया था। क्योंकि, उन्हें देश के लिए काम करना था।

गोपाल ने बताया उनका जीवन काफी संघर्ष भरा रहा। एक खपरैल के घर में वह पढ़ाई किया करते थे। यहीं से उन्होंने आविष्कार शुरू किया। यही वजह है कि अब गोपाल पर बायोपिक फिल्म बनने वाली है, जिसका नाम 'बनाना बॉय' होगा। गोपाल के परिवार में उनके माता-पिता, दो बहनें व बहनोई है, जिसे गोपाल अपनी सफलता का श्रेय देते हैं। पिता प्रेम रंजन कुमार पेशे से किसान हैं। बेटे की सफलता पर वह फूले नहीं समा रहे। पिता ने कहा कि उसके अविष्कार से वह काफी खुश हैं। केले के पल्प से वो काफी कुछ तैयार कर रहा जो देश के लिए लाभदायक है। गोपाल बचपन में भी बहुत मेहनत करता था। एक खपरैल के मकान में ही सभी रहते थे और वहीं से यह पढ़ाई भी करता था।

ऑस्कर का आनंद और आनंद का ऑस्कर

अशोक जोशी

वैसे तो हर साल मार्च के दूसरे रविवार को ऑस्कर पुरस्कारों की घोषणा होती है। लेकिन, इस साल का 95 वां ऑस्कर पुरस्कार समारोह हमारे लिए कुछ खास संदेशा लेकर आया। यह पहला मौका है, जब किसी विशुद्ध भारतीय प्रतिभा को ऑस्कर पुरस्कार में परचम लहराने का मौका मिला है। यानी की इस बार भारत को मिले दोनों अवार्ड सही मायने में स्वदेशी की भावना का प्रबल करते हैं। दुनियाभर के फिल्मकारों ने मेड इन इंडिया के महत्व को पहली बार ऑस्कर के मंच से सलाम किया है।

कुछ 'नाटू नाटू' की धुन पर थिरकते हुए लोग थोड़े संयत हुए थे कि कार्तिकी गोंजाल्विस के निर्देशन में बनी निर्माता गुनीत मोंगा की शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री 'द एलिफेंट व्हिसपरर्स' के जीतने से भारतीय सिनेमा उद्योग और सिने प्रेमियों की खुशियां दोगुनी हो गई। भारतीय सिनेमा के विश्व पटल और खासकर ऑस्कर के मंच पर इस कदर आत्मविश्वास भरे प्रदर्शन का माहौल इससे पहले कभी नहीं था। इससे पहले गांधी और स्लमडॉग मिलेनियर को जो ऑस्कर अवार्ड भारतीय हस्तियों को मिले वह पूरी तरह से भारतीय नहीं थे। क्योंकि, गांधी भारतीय फिल्म नहीं थी। इसके निर्माता और निर्देशक दोनो ही विदेशी थे। 'स्लमडॉग मिलियनर' के साथ भी डैनी बॉयल का नाम जुडा था। लेकिन, इस बार 'नाटू नाटू' और 'द एलिफेट व्हिसपर्स' के पुरस्कारों में किसी तरह की मिलावट नहीं है। दोनो खालिस हिन्दुस्तानी फिल्मकारों का कमाल है।

इस ऑस्कर से मध्य प्रदेश और खासकर इंदौर इसलिए भी गौरवान्वित और रोमांचित है। क्योंकि, ऑस्कर में बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट फिल्म की श्रेणी में बाजी मारने वाली 'द एलिफेंट व्हिस्पर्स' के साथ इंदौर निवासी और युवा सिनेमेटोग्राफर आनंद बंसल का नाम भी जुड़ा है, जिन्होंने अपने प्रकृति प्रेमी परिवार के प्रकृति प्रेम को कैमरे में कैद कर 'द एलिफेंट व्हिसपर्स' को दर्शनीय बनाया है। 39 मिनिट का यह वृत्त चित्र मुदुमलाई नेशनल पार्क में फिल्माया गया जो हाथी के एक अनाथ बच्चे रघु की देखभाल में अपना जीवन समर्पित करने वाली दम्पत्ति बोम्मन और बेली की दिल को छूने वाली कहानी कहता है।

आनंद बंसल के लिए यह फिल्म इसलिए भी खास है कि उनके करियर में योगदान देने वाले उनके ताऊजी और इंदौर के व्यवसायी महेश बंसल स्वयं प्रकृति प्रेमी है। उन्होने अपने घर को एक प्राकृतिक स्थल बना रखा है और पेड़ पौधों की देखभाल और संरक्षण के प्रति उनके समर्पण से पूरा परिवार प्रभावित है। आनंद को भी यही प्रकृति प्रेम 'द एलिफेंट व्हिसपर्स' के फिल्मांकन में काम आया। उन्हें इसके लिए फिल्मांकन करना ऐसा ही लगा जैसे वे अपने परिवार की परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए प्रकृति को अपने कैमरे में फ्रेम दर फ्रेम कैद कर रहे हैं।

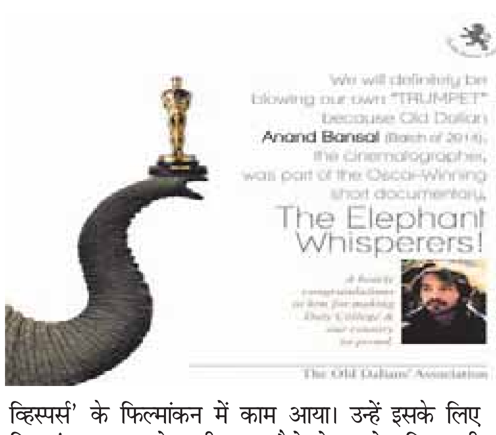

आनंद के लिए 'द एलिफेंट व्हिस्पर्स' का ऑस्कर जीतना किसी रोमांच से कम नहीं है। इस प्रोजेक्ट की योजना कोई पांच साल पहले तैयार हुई थी। उसी दौरान एक मित्र के माध्यम से आनंद और फिल्म की निर्देशिका कार्तिकी की मुलाकात हुई। दोनों साथ बैठे और बात करते करते इस फिल्म की योजना बना बैठे। 26 वर्षीय आनंद को कैमरे से परिचय सबसे पहले उनके स्व पिता ने कराया, जिन्हें फोटोग्राफी से बेइंतहा प्यार था। कम उम्र में अपने पिता से विछोह के बावजूद उनकी विरासत, फोटोग्राफी के शौक और गुण को मन में बसा कर वे बचपन से ही फोटोग्राफी के लिए तैयारियां करने लगे। इस काम में उनके ताऊजी-ताईजी ने न केवल उनका उत्साहवर्धन किया, बल्कि दुनिया के बेहतरीन कैमरे उन्हें लाकर दिए और डेली कॉलेज की पढाई के बाद मुंबई स्थित व्हिसलिंग वुड्स फिल्म स्कूल में सिनेमेटोग्राफी का कोर्स भी करवाया।

आनंद ने 'द एलिफेंट व्हिसपर्स' से पहले 'द रूम विद नो विंडो' का फिल्मांकन भी किया। इस फिल्म को जॉर्जिया की राजधानी थीबिलिस में हुए इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में विशेष पुरस्कार भी मिला। इस समय आनंद फिल्मकार अचल मिश्रा की फिल्म पर काम कर रहे हैं। इससे पहले वे उनकी दो फिल्मों 'गमक घर' और 'धुईन' पर काम कर अपनी पहचान बना चुके हैं। यह दोनो फिल्में अंतर्राष्ट्रीय सराहना प्राप्त कर चुकी हैं। इन्हें पिछले साल म्यूजियम आफ आर्ट न्यूयॉर्क में दिखाया गया था। इसके अलावा वह नेटफ्लिक्स के दो प्रोजेक्ट पर भी काम रहे हैं, जो इस साल के अंत तक प्रदर्शित होंगे।

उन्हें सिनेमेटोग्राफी का सबसे बडा पाठ 'द एलिफेंट व्हिसपर्स' से सीखने को मिला। क्योंकि इसके सितारे कोई फिल्मी कलाकार नहीं, बल्कि वन्य प्राणी थे जिन्हे कैमरे में कैद करने के साथ उनके मनोभाव को कैद करना चुनौतीपूर्ण काम तो था ही साथ ही घने जंगल के अंदर जाकर शूटिंग करना और दक्षिण भारत के लोगों के साथ तालमेल बिठाना भी आसान नहीं था। आनंद ने इसमें धैर्य को अपना हथियार बनाया और पांच साल तक लगातार धैर्यपूर्वक कैमरे के पीछे खड़े रहकर अपने साथी सिनेमेटोग्राफर के साथ मिलकर इसे दर्शनीय बनाया।

'द एलिफेंट व्हिसपर्स' के फिल्मांकन के दिनों की याद करते हुए आनंद बताते हैं कि उनके लिए यह समझना सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था कि हाथी या किसी भी जानवर के सामने किस तरह से व्यवहार किया जाना चाहिए। फिल्म का हाथी बहुत छोटा था ,वह बच्चों की तरह हरकतें भी करता था। इसलिए उनके साथ उसी तरह व्यवहार करने के साथ साथ इस बात का खास ध्यान रखा गया कि शूटिंग के दौरान वह सहज रहे और उन्हें किसी तरह की तकलीफ न हो। यह अनुभव उनके लिए बहुत शिक्षात्मक रहा। वह मानते हैं यह अनुभव आगे उन्हें एक परिपक्व सिनेमेटोग्राफर बनने में भी बहुत मदद करेगा।

उनका मानना है कि किसी भी फिल्म के निर्माण में कथानक और उससे जुड़े संदेश को सम्प्रेषित करने में कैमरा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी बात को ध्यान में रखकर उन्होने पूरी ईमानदारी के साथ कैमरे का प्रयोग किया और इस बात को सीखा कि बच्चों और अभिभावकों के बीच सरलता और विनम्रता के क्या मायने होते है। यही संस्कार हमें आगे की राह दिखाते हैं। उनका मानना है कि अभी तक हमारे देश में वृत्त चित्रों के निर्माण को दोयम दर्जे की तरह माना जाता रहा है । लेकिन ऑस्कर पुरस्कार जीतने के बाद अब यह धारण बदलेगी और इस विधा से जुड़े फिल्मकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अब ज्यादा अवसर मिलेंगे।

संगीत की धारा

आनंद सिन्हा

(लेखक कला मर्मज्ञ व पूर्व संपादक कलावार्ता हैं)

आदिम संगीत से लोक व शास्त्रीय संगीत तक की यात्रा....

आदिम संगीत का उत्स और मन्तव्य क्या है? इसकी प्रोचना भी आवश्यक है। ऐसा कहा जाता है कि आदिम संगीत के प्रणेता 'शिव' हैं। आदि काल में 'शिव'आदिम जनजातियों के देवता रहे हैं। आज गोंडों के बूढादेव और लिंगो शिव के पुरातन रुप माने जाते हैं और पूजे जाते हैं। लिंगो ने गोंडों को बजाने के लिये अठारह वाद्य दिये। जिससे आदिम संगीत उपजा और गाना पैदा हुआ। अनेक आद्य धुनें बनी। गोंडों के बाना औरकिनारी संभवतया विश्व के प्राचीनतम वाद्यों में से हैं, जो तार वाद्य हैं। प्रारंभ में शिव'का यह 'रूद्र का था जो आदि देवता माने जाते हैं। 'शिव बहुत बाद के देवता हैं। शिव का यह नाम पार्वती के विवाह के समय का है। शिव के डमरू से आदिम संगीत की उत्पति हुई, जो मूलतः एक ताल वाद्य है। इसी ताल से एक लय का जन्म हुआ। यह लय भी ओंकार की है। जो भारतीय 'नाद'का मूल है। डमरू की लय ताल पर ताण्डवकी सृष्टि हुई। नृत्य के पीछे जो संगीत पैदा हुआ, उसे हम आद्य संगीत की संज्ञा दे सकते हैं। आदिम मानव नृत्य के चरम आनंद के लिये अनेक विधियों, प्रविधियों का सृजन करता आया है। जिसने मानव के आन्तरिक और बहिर्जगत को आनन्द की जय दी और उसके साथ उसे वाद्य और संगीत के सौंदर्य से समृद्ध किया है।

पश्चिम के एक अध्येता सुसाली के लैंगर ने कहा है 'नृत्य-संगीत वन्य जीवन का सर्वाधिक गंभीर बौद्धिक व्यापार है। देश और काल से परे किसी अज्ञात लोक में सम्मुखीन होने का प्रयास है। यह एक ऐसी मानव धारणा है। जो व्यक्ति जनातीत और जीवन तथा मृत्यु से परे होकर भी शेष प्रकृति से परिवेष्ठित और पोषित हैं। पद्मश्री शेख गुलाब ने जनजातियों के साथ काम करते हुए आदिम संगत के बारे में कुछ इस तरह महसूस किया। वन में उगे हुए वृक्षों ने इन्हें समूह में रहना सिखाया। हवा के झोंकों से लहराती हुई खेत की फसलों, जंगल की वनस्पतियों ने इन्हें नृत्य को गोल घेरे में बांधना सिखाया। बादलों की गरज-तरज तथा कड़क और चमक ने इन्हें मांदर व टिमकी वाद्य की ध्वनि दी और सनसनाती हई हवा ने इन्हें बांसुरी बजाना सिखाया। गरज ये कि इन्होंने अपने गीत-संगीत और नृत्यों में प्रकृति की छटा को बांधा और प्रकृति ने ही नृत्य-गीत--संगीत की शिखा दी । यदि कहा जाय तो आदिम संगीत जंगल में फूटने वाला उन्मुक्त निर्झर है,

जिसका पानी मीठा है। पशु-पक्षी जहां किलोल करते हुए उसका पानी पीने में मशगूल होते रहे हैं। मैं सोचता हूं कि आदिम संगीत को इसी तरह महसूस किया जा सकता है। आदिम मानव के वंशजों के मन की मौज का नाम आदि संगीत है, जिसे धुन की संज्ञा दी जा सकती है।

सुरों का नैसर्गिक संयोजन ही धुन है

यह नैसर्गिक सुर तो पशु-पक्षियों की स्वाभाविक आवाजों से लिये गये हैं। चाहे वे आदिम स्वर प्रारंभ में दो, पांच अथवा शास्त्र में निबद्ध सात सुरों का स्वरग्राम नियमन क्यों ने हो? सारी दुनिया में आदिम जातियों में भी अलग-अलग स्वर ग्राम विकसित हुए हैं। चीनी संगीत का स्वरग्राम ही दूसरा है। लेकिन वहां भी स्वरों का कलात्मक'संयोजन है । प्रतिद्ध संगीतज्ञ पं. ओंकारनाथ ठाकुर ने ठीक कहा है 'मेरा निरीक्षण यह है कि आरंभ में मनुष्य भी एक प्राणी था, जैसे कि घन छाने पर मयूर नृत्य करने लगता है, वसन्त में कोयल गा उठती है, उसी प्रकार मनुष्य प्राणी में भी संगीत का आरंभ हुआ ।

जब आदिम धुन में केवल ऐसे सुर ध्वनित हो, जिनकी तारता में दो तीन चार गुने का अन्तर हो तब स्वर शुद्ध और पारदर्शी प्रतीत होते हैं। इसे ही 'लोक संगीत'कहा जाता है। इस बात को स्वयं पं. कुमारगंधर्व ने संगीत के अपने व्यावहारिक ज्ञानानुभव से सिद्ध भी किया है। उन्होंने कबीर के लोक पदों और मालवा के लोक संगीत को न केवल शास्त्रीय संगीत की तरह गाया है, बल्कि बोलियों की'शब्द शक्ति को भी शास्त्रीयता प्रदान की है, क्योंकि स्वर संगीत तो ध्वनि तरंग है। कण्ठ से निकलने के बाद वह हवा में लीन हो जाता है। रह जाती है कानों में केवल उसकी अनुगूंज । कोई भी संगीत शब्द के सहारे हजारों साल स्मृति में जीवित रहता है। लोक में यह शब्द वाचिक परम्परा में हैं। वाचिक परम्परा ने संगीत को सुरक्षित रखने की अपनी विधियों प्रविधियां ही खोज ली है। इन विधियों को हम गीत, कथा, गाथा, नृत्य, नाट्य आदि कह सकते हैं। संसार का सारा गीत-संगीत इन विधाओं में समाहित है, जो निरन्तर है। आदिम संगीत नितांत आखेटक गुहा मानव की देन है, इसलिए उसमें उनके जीवन को पाने की तरह स्वर और शब्द की तलाश भी स्पष्ट दिखाई देती है। आज भी कई जनजातियों में नृत्यों में गीत यानी शब्द नहीं है, केवल लय, ताल, धुन और स्वर ही हैं। उदाहरण के लिये भीलों का भगोरिया नृत्य ढोल-मांदल की थाप पर ही घण्टों नाचा जाता है। बस्तर की मुरिया जनजाति केवल 'रेलोयो -रेलोयो के स्वरों के साथ टिमकी, मांदरी और घंटियो की ध्वनि के सहारे रात भर नृत्य करने में मशगूल होती है। ये आदिम संगीत के अवशेष चिन्ह कहे जा सकते हैं, जो आदिवासी जीवन स्मृतियों में अभी तक शेष है।

लोक के साथ संगीत भी बदला

लोक संगीत कुछ इससे आगे की चीज है। लोक संगीत गुहा से उतरकर जब नदी, पहाड़, जंगल, घर-परिवार, बस्ती, गांवों और मैदानों में फैल गया, तब वह ' 'लोक संगीत'बन गया । जैसे-जैसे लोक बदला, वैसे-वैसे संगीत का विस्तार होने लगा। मेरा अनुभव है कि जबजब लोक बदलता है, तब-तब मानस का चेहरा भी बदलता है। नये रूप ग्रहण करता है। जब लोक बदला, तब लोक संगीत ने भी अपना नया रूप ग्रहण किया और यह रूप, संगीत में स्थायी स्वरों की तलाश रही है। लोक संगीत में दो पांच छह तक स्वरों की पहचान होने लगी थी। यह विशेषता केवल मानवीय कण्ठ में ही संभव रही है कि उसे कण्ठ में स्वरों की विविधता नैसर्गिक रूप से प्राप्त है । किसी को यह तारत्व कम या ज्यादा मिल सकता है। किसी की आवाज घोषदार हो सकती है, किसी की पतली इसीसे कण्ठ की मिठास, माधुर्य और विस्तार का आभास बनता है।

शास्त्रीय संगीत की पूर्वपीठिका

विश्व में लोकसंगीत की कुछ वर्ष पूर्व एक सर्वमान्य परिभाषा गढ़ी गई। उसे मैं यहां इसलिए उद्धृत करना चाहता हूं कि इस परिभाषा में लोकसंगीत फिर भी अपरिभाषित रह गया है। लोक संगीत अमर है। क्योंकि वह अपने आप में पूर्ण है। परिभाषा है लोकसंगीत उस संगीत परपंरा की उद्धावना है, जो मौखिक परपंरा के माध्यम से विकसित हुई। इस संज्ञा का प्रयोग उस संगीत के लिये किया जा सकता है, जिसका विकास कलात्मक शास्त्रीय संगीत के प्रभाव से पूरे समुदाय में स्वाभाविक रुप से होता है। साथ ही इसका संबंध उस संगीत से भी है जो किसी व्यक्ति विशेष द्वारा रचित होकर समाज में रममाण है। ऐसा माना जाता है कि नृत्य अपने आविर्भावी काल में ही चरम सीमा पर पहुंच गया था, लेकिन संगीत के बारे में स्थिति चरणबद्ध मानी जा सकती है। उसमें धीरे-धीरे वृद्धि हुई। पहले धुन बनी, फिर स्वर संयोजित हुए। इसके बाद राग-रागनियों का क्रम आया । बाद में पंचम और सप्तक आये। यह सब लोक संगीत की सृष्टि में घटित हो रहा था या यूं कह लें कि यह शास्त्रीय संगीत की पूर्व पीठिका तैयार हो रही थी।

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज सुविख्यात इजरायली कवि येहूदा अमिखाई की एक कविता का अनुवाद ।

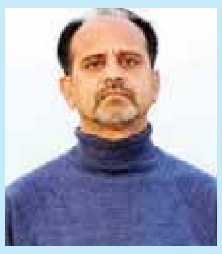

गणित की किताब में समस्या

मुझे गणित की किताब का एक सवाल याद है
जो एक रेलगाड़ी के बारे में था जो एक स्थान 'अ ' से छूटती है
और एक दूसरी रेलगाड़ी
एक स्थान ' ब ' से छूटती है।
ये दोनों कब मिलेंगी?
आज तक कभी किसी ने नहीं पूछा क्या होगा जब वे मिलेंगी
क्या वे रुक जाएंगी, या करीब से गुजर जाएंगी या फिर टकरा जाएंगी?
और एक भी सवाल उस पुरुष के बारे में नहीं था
जो एक स्थान ' अ ' को छोड़ता है
और एक स्त्री एक स्थान ' ब ' को छोड़ती है।
वे कब मिलेंगे ,
क्या वे कभी मिलेंगे भी , और मिले भी तो कितने समय के लिए?
और जहां तक उस किताब का सवाल है -
अब मैं उत्तर तालिका के अंतिम पृष्ठों तक पहुंच गया हूँ उस वक़्त इसे देखना मना था
परन्तु अब देख सकता हूँ
जाँच सकता हूँ क्या सही और कहाँ गलत था
और जानता हूँ मैंने क्या अच्छा किया और क्या गलत किया आमीन ।

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

वेंटीलेटर पे लटकी जिंदगियां

बात विचारने की है और विचित्र भी। हर महीने मुझे तीन-चार ऐसे बुजुर्गो के गुज़रने की सूचना मिलती है और वो ऐसे लोग हैं जो साल भर से कभी घर, कभी अस्पताल, कभी डायलिसिस पे जाते हैं यहां तक कि हम भी इतने आदि होते जा रहे हैं कि कहते हैं, 'अरे वो अभी थे?' भगवान जाने उनके परिवार को सांत्वना देने जाऊँ कि वो गुज़र गये, या बधाई कि आप को राहत मिल गई। हम सब चलते फिरते, फोन पर ऐसे बीमारों के लिये कहते है अरे भई बड़ा कष्ट पा रहे हैं भगवान उन्हें कष्ट से मुक्ति दे। घर वालों के आंखों में आंसू आ जाते है, 'भगवान इन्हें उठा लो अब नहीं देखा जाता।'

पर क्या कभी हमने सोचा मृत्यु से पहले का ये पीड़ा का दौर का समय बढ़ता क्यों जा रहा हैं हर बुजुर्ग पहले ही घोषणा करता हैं हमें वेंटीलेटर पर मत लटकाना पर ऐसा कहीं होता है अगर आप ऐसा करेंगे तो लोग क्या कहेंगे। ऐसे समय डॉक्टर की सलाह से बढ़कर कुछ नहीं। झूठे इल्ज़ाम भी लगाना बंद कर दीजिये कि पैसा कमाने के लिये वेंटीलेटर पर लटकाया जाता है। मानो वेंटीलेटर लाइफ सपोर्ट सिस्टम ना होकर यीशू की सूली हो गया। मेरी माँ सालों से बिस्तर पर थी अचानक डीमेंशिया के कारण भूल गई कि वो चल नहीं सकती। उठ के चल पड़ीं और गिर के हिप बोन टूट गई, तब भी 8 महीने रही बिस्तर पे। परेशानी ये कि दिमागी हालत के चलते वो बार-बार उठ जाती और गिर जाती।

अंतिम समय जब वो अस्पताल में थी मेरी कतई इच्छा नहीं थी कि उन्हें वेंटीलेटर पर रखा जाये क्योंकि वो ऐसे सालों रह सकती थी। डॉक्टर ने भी ऐसे समय सहयोग किया उनका भी मानना था आप सक्षम है। महीनों वेंटीलेटर पर रख सकते हैं पर इम्प्रूवमेंट कुछ नहीं होगा और लोग समझते है कि वेंटीलेटर लगे पेंशेट को तकलीफ़ नहीं होती ये गलत है तो मैंने भी अंतिम समय में अपनी माँ, और ससुर को डाक्टर की सलाह पर वेंटीलेटर पर नहीं रखा। जिन बुजुर्गो से अभी मिलती हूँ वे कहते है हमारे समय में तो ऐसा नहीं होता था बीमारी और उम्र आते ही हमारे पिताजी, दादी, माँ चटपट गुज़र गये। आजकल जाने कौन सा इलाज करते है डॉक्टर। सालों पलंग पर पड़े रहना किसे अच्छा लगता है? भगवान हमें तो एक झटके में उठा ले या रात को सोयें तो सुबह उठे नहीं। ''मर्सी किलिंग'' जैसे विषय पर चर्चा बेकार है तो क्या वेंटीलेंटर हटाना ''मर्सी किलिंग का दूसरा रूप है।

इसके लिये मैंने अपने मित्र डॉ. अशोक गुप्ता से बात की। मेरा पहला सवाल था उनसे आख़िर वेंटीलेटर की आवश्यकता क्यों ? उन्होंने बताया जब पेशेंट के कुछ अंग काम करना बंद कर देते है और वो स्वयं सांस लेने में सक्षम नहीं होता तो वेंटीलेटर के माध्यम से सांस लेता है। मेरा दूसरा सवाल था क्या सभी क्रिटिकल मरीज़ों को वेंटीलेटर लगाना आवश्यक है? उन्होंने कहा कुछ रोग ट्रीटेबल होते है उसमें हम तुरंत वेंटीलेटर लगाते है कुछ नॉन ट्रीटेबल (लाइलाज) होते है उसमें हम परिवार की सलाह लेते है कई बार मरीज़ के बचने की उम्मीद नहीं होती पर परिवार वाले कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते तो हमें उनकी बात माननी होती है। क्या सभी केसेज में वेंटीलेटर हटाते ही मृत्यु हो जाती है?

तब उन्होंने बताया कि ऐसा बिल्कुल नहीं है जब इलाज करने लायक हालत हो अंग अच्छे हो तो थोड़े समय वेंटीलेटर लगा के हटाते है वेसे भी बीच-बीच में वेंटीलेटर हटाया जाता है।

मेरा आख़िरी महत्वपूर्ण सवाल था पुराने जमाने में तो बुजुर्ग इतना लंबा वक़्त बिस्तर पे नहीं गुजारते थे आज तो घर वाले ख़ुद मरीज़ के गुजरने का इंतज़ार करते है। उन्होंने स्पष्ट जवाब दिया एडवांस टेक्नॉलोजी, आधुनिक दवाईयां इसकी वजह है। पहले शुगर पेशेंट 50 साल में भी गुज़र जाते थे आज दवाईयों, टेक्नॉलोजी से 90 साल तक भी खिंच जाते है। आज घुटने रिप्लेसमेंट हो जाते है पर पहले मरीज बिस्तर पर पड़ा रहता था बेड सोर हो जाते थे तो कुल मिलाकर इन टेक्नॉलोजी से पेशेंट की जीने की अवधि बढ़ जाती है पर स्वस्थ जीवन जिये कोई ज़रूरी नहीं। सो उसी अवस्था में केयर टेकर वेंटीलेटर डायलिसिस रख उन्हें जिंदा रखा जाता है।

अभी हाल में मेरे परिचित जो अचानक बीमार हुये 75 वर्ष के थे। पुत्री ने उनको अस्पताल भर्ती किया। पुत्र अमेरिका में था। अस्पताल में पता चला दोनों किडनी में कैंसर है अब बेटा दूरी के अपराध बोध से जिद पे अड़ा था तमाम सुविधायें जुटा दी 15-20 दिन रहा। पुत्री सेवा में थी लगभग डेढ़-दो महीने वो पुत्री की सेवा काम आई।

अब डॉक्टर ने सलाह दी सब सुविधायें हटानी चाहिये, कब तक अस्पताल में रखेंगे, पुत्र को आना भी नहीं था पर उसे उपकरण हटाने पर आपत्ति थी। ऐसे ज़िंदा रखने से किसी का भला नहीं हो सकता था। फिर डॉक्टर से बात कराई गई उन्होंने कहा आप दूसरे अस्पताल ले जाइये पर सब उपकरण् हटाते ही वे गुज़र गये। एक फालतू की ज़िद में वे पीड़ा सहते रहे।

तो कुल मिलाकर इस बरस मैंने कई आंखों में दर्द देखा कि किसी को जाना है किसी को जाने नहीं देना है। समझदारी यही कहती है डॉक्टर से सलाह ले लाइलाज बीमारी में वही तक जायें जहां तक उम्मीद है। फिर भी वो चाहे सुने या ना सुने आप उनसे कहते रहें ज़रूर और क्या कह रही है जिंदगी।

'आ, गले लग (पड़) जा...!'

प्रकाश पुरोहित

ओरिजनल आइडिये की हमारे देश में कोई कदर नहीं है। वेलंटाइन जैसे घनघोर विदेशी-दिन पर यदि किसी देशी अधिकारी ने देशी गाय को गले लगाने का देशी फरमान जारी किया था तो इसका आकाश के देवी-देवता सहित देशी तुमुल-ध्वनि से स्वागत होना चाहिए था। ठीक है, दूध और बछड़े नहीं दे रही पवित्र गौ को घर बैठे खिलाना-पिलाना, कर्ज में डूबे और खुदकुशी के तरीकों पर माथापच्ची कर रहे किसान के बस की बात नहीं है, लेकिन यह भूल जाते हैं कि हम भले ही गाय को नहीं खिलाएं, मगर वह तो गोबर देने से पीछे नहीं हटती है। हमारी सरकार दूध के दाम भले ही तय नहीं कर सकती हो, लेकिन गोबर का रेट तो पक्का है। दूध की सरकारी खरीदी नहीं हो रही हो, गोबर की तो धड़ल्ले से जारी है। क्या हम सिर्फ गोबर के लिए गाय नहीं पाल सकते? यह गृह-उद्योग की कतार में आता है, लेकिन लोगों को तो बस गाय मतलब दूध ही है। सरकार ने इसे 'काउ-हग-डे' कहा है... यहां हग का मतलब गोबर से नहीं, गले लगने से है, वरना गाय की तो मुश्किल होती ही, फिर सरकार क्या खरीदेगी, अगर गोबर का एक दिन तय हो गया तो...!

यह तो हो नहीं सकता कि गौ-माता को हम घर बैठाए रखें, गोबर अवेरते रहें और खाने-पीने को नहीं दें। ऐसे में आदर्श हल यही है कि बांकड़ी गाय के माथे पर तिलक लगाएं और उन्हें रोज पचास किलोमीटर बन रहे हाइ-वे पर आजाद विचरण के लिए छोड़ दें। ऐसे में यदि कोई गाय माता किसी गाड़ी से टकरा कर प्राण त्याग दे तो गलती गाय की नहीं, उसके मालिक की नहीं, उस ड्राइवर की है, जो यह याद नहीं रख पाता है कि हाइ-वे का यह कतई मतलब नहीं है कि आप अपनी स्पीड आम सड़क की ही तरह रखें कि गौ-माता कहीं भी, कभी भी प्रकट हो सकती है। मौत और ग्राहक के बाद गौ माता ही है, जिनका कोई भरोसा नहीं कि कब सड़क के बीचोबीच आ जाए!

सोचिए, अगर अधिकारी के उस आदेश पर अमल हो जाता तो... अहा! क्या अद्भुत दृश्य बनता कि जैसे ही गाय-अम्मा सड़क के बीच आ खड़ी होती कि 'इधर जाऊं या उधर जाऊं... कंफ्यूज हूं तो यहीं बीच सड़क पर बैठ जाऊं' कि गाड़ीवान उतरता और गाय के गले लगने लगता। ठीक है, मनुष्य का यह बदला हुआ चेहरा देख शुरू में गाय शक की निगाह से देखती और संभव है दो-चार भिट्टी और एक-दो लातें जमा देती,

लेकिन समझ आने पर हर दस-बीस कदम पर इस तरह के आलिंगन-दृश्य क्या रमणीय छटा पेश करते, जरा कल्पना करके तो देखिए! आप देखते कि उस एक दिन में एक भी गाय की टकराने से मौत नहीं हुई है। हाइ-वे से लेकर आम सड़क तक यह प्रेम-प्रदर्शन चल रहा होता। यह तो हांडी का चावल था। यदि सीज जाता तो इसे हर दिन के लिए भी लागू किया जा सकता था, जब तक कि देश के हर किलोमीटर पर एक-एक गौशाला का वादा सरकार पूरा नहीं कर देती।

अब तक आपने कितनी गाय सड़क पर मारी हैं, इसका तो कोई सरकारी रिकार्ड नहीं है, लेकिन कितनी गाय के गले लगे हैं, ऐसा वीडियो बताने पर टोल टैक्स से छूट मिल सकती थी और उस वीडियो से डर कर पुलिस भी ना तो कागजात (कृपया, नोट ना समझें) देखती और कोई गलती नहीं होने पर भी चालान नहीं बनाती। इस तरह के प्रलोभन दिए जा सकते थे। जो अधिकारी 'आ गले लग जा' की सोच सकता है, इस तरह की छूट भी दे ही सकता है।

दरअसल, यह काम यानी गाय के गले लगने का, सरकार की तरफ से नहीं होना चाहिए था, क्योंकि इस वजह से वे सारे संगठन बेचारे हाशिए पर चले जाएंगे, जो गो-कशी के बलबूते पर लाइम लाइट पा रहे थे। जो गाय की तस्करी करने निकले हैं, वे भी इन हुड़दंगियों को देख गाय के गले लगने लगते तो फिर ये बेचारे गाय के नाम पर किस पीलू खान की लिंचिंग करते, कार में जिंदा जलाते या संगठन चलाने के लिए वसूली करते। ये काम सलीके से तभी होता, जब ये अधिकार इन गौ-भक्तों को दे दिया जाता तो विरोधी दल भी चुप रहते, फिर भले ही दिखावे के लिए गाय के गले नहीं लगते। बरसों पहले मोहनदास करमचंद गांधी ने कहा था साध्य ही नहीं, साधन भी पवित्र होने चाहिए, यानी कोई भी काम थ्रू प्रॉपर चैनल होना चाहिए, मतलब गाय का सुरक्षित जीवन जब इन संगठनों के हाथ में है तो फिर सरकार के अधिकारियों को इसमें अपनी टांग नहीं फंसानी चाहिए थी। 'अच्छी-खासी गाय बचाओ स्कीम' लागू होने के पहले ही ध्वस्त हो गई।

यह रात की धारणा (बाजार की शब्दावली में) है कि वेलेंटाइन-डे पर सिर्फ प्रेमी ही गले मिलते हैं, जबकि आंकड़े बताते हैं कि जब भी उन्हें मौका मिलता है, ऐसा कर लेते हैं तो फिर एक दिन गाय के गले लगने का क्यों नहीं होना चाहिए! प्रेमी एक तरफ से, तो प्रेमिका दूसरी तरफ से गाय के गले लग सकती है, एक-दूसरे का हाथ पकड़ते हुए। इस तरह उन्हें पश्चिम की संस्कृति के विरोधी भी डंडे नहीं मारेंगे और ना ही 'मांग भरो सजना' का आयोजन करेंगे। आप गाय-प्रेमी तो युगल रूप में भी हो सकते हैं, क्योंकि यह हमारी संस्कृति है, लेकिन यदि आप सिर्फ प्रेमी-प्रेमिका होना चाहेंगे तो संस्कृति के रखवालों से यह बर्दाश्त नहीं होगा। अखंड भारत के तमाम युगल-प्रेमियों को गाय-आलिंगन के हक में खड़ा होना चाहिए। इस तरह सनातन परंपरा तो बचा ही लेंगे, खुद भी पीटने से बच जाएंगे, सोचना जरा!

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

कब्जियत का ईसबगोल

एक समय था जब कभी किसी के घर से एकाएक दहाड़ मार कर रोने की आवाज आती थी तो पूरा मोहल्ला जान जाता था कि कोई गमी हो गई है. सब इक्कठा होकर उनके गम में शरीक होते...

मेरी एक गज़ल का शेर है-
कैसे जीना है किसी को ये बताना कैसा,
वक्त के साथ हर सोच बदल जाती है...
..जाने क्या बात है जो तुमसे बदल जाती है...

वाकई इन 15 दिनों के भीतर पूरी की पूरी सोच ही बदल गई. शब्दों और मुहावरों के मायने बदल गये हैं..जहाँ एक ओर लोग विमुद्रीकरण जैसे किलिष्ट शब्द का अर्थ समझ गये.. वहीं इसे एक नया 'नोटबंदी' जैसा नाम मिला..मानों कि काले धन की बढ़ती आबादी को रोकने हेतु नोटों की नसबन्दी कर दी गई हो.

एक समय था जब कभी किसी के घर से एकाएक दहाड़ मार कर रोने की आवाज आती थी तो पूरा मोहल्ला जान जाता था कि कोई गमी हो गई है. सब इक्कठा होकर उनके गम में शरीक होते...ढ़ाढ़स बँधाते.. अब जब ऐसी आवाज आती है तो पूरे मोहल्ले में खुसपुसाहट के खिल्ली उड़ाने लगती है कि हम तो पहले से जानते थे कि खूब धन गड़ाये है घर में..लो मिट्टी हो गया..अब रोने के सिवाय कर भी क्या सकते हो!!

तब लोग सूटकेस, टिफिन और पानी की बोतल लेकर लम्बी यात्रा और देशाटन पर जाया करते थे- सब उन्हें शुभ यात्रा कह कर विदा करते. आज उसे ही, बैंक की लाईन में लगने जा रहा होगा, कह कर लोग अपनी चटकारी बातों का पात्र बना रहे है.

पहले बच्चे घर में इसलिए पिटा करते थे कि स्कूल नहीं गये..पिता का नाम डुबो कर मानेंगे और आज इसलिए पिट रहे हैं कि निक्कमें हैं स्कूल चले गये. इतना भी नहीं कि बैंक की लाईन में खड़े होकर पिता जी नोट बदलने में साहयता कर दें.

पहले बीबी जेब से पैसा निकाल कर बुरे वक्त के लिए बचा कर छिपाकर रखती थी और आम दिनों में पूछो तो कहती थी कि मेरे पास रुपया कहाँ से आयेगा..बैंक से निकालो और वही बीबी आज उसी छिपाये चरौंधे में निकाल कर रुपया लाकर दे रही है और पूछ रही है खाते में जमा तो हो जायेगा न?कभी जिस बैंक से आये रिप्रेजेन्टेटिव को दूर से आता देखकर हम एकदम हकबका जाते थे कि ओह!! फिर आ गया..डिपाजिट मांगेगा और बच्चों से कहलवा देते थे कि बोल दो, पापा घर पर नहीं है ..आज उसी रिप्रेजेन्टेटिव को हमारी कातर निगाहें चहु ओर खोज रही हैं कि दिख बस जाये तो नोट डिपाजिट करवा दें.

सबसे बड़ा बदलाव जो मुझे दिखाई पड़ रहा है वो इस बात में कि जब कहीं से ये फुसफुसाहट सुनाई देती थी कि ठिकाने लगा आये.. तो सीधे दिमाग में कौंधता था कि जरुर किसी लाश को ठिकाने लगा कर आया है बंदा..आज लाश की जगह 1000 और 500 के अमान्य नोट विराजमान हो गये हैं...उन्हें ही ठिकाने लगा कर आदमी ऐसी चैन की सांस भरता है मानो लाश ठिकाने लगा अया हो.. हालांकि लाश ठिकाने लगा आनें में भी कम ही चांस था कि पुलिस से बच पाते और वही हाल अब इन्कम टैक्स वालों से इस नोट ठिकाने लगा आने में है मगर तात्कालिक सुकून तो मिल ही जाता है..मानो कि आज रात इसबगोल खाकर सो जाये तो जीवन भर के लिए कब्जियत से निजात मिल जायेगी...यह तय है कि कल कब्जियत से आराम तो लगेगा मगर जो कल इसबगोल नहीं खाया तो परसों फिर वही हाल...

देखना अब यह है कि इस बड़े बदलाव से जिसने बातों के मायने बदल डाले...वो और क्या क्या बदलता है और कब तक के लिए.. कहीं परसों से फिर से काले धन का कब्ज देश के पेट में मरोड़ न देने लगे।